डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 मार्च 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✿ बानी

वर्ष - आठवां | अंक-ग्यारहवां | मार्च-2011 | मासिक पत्रिका

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 9950 55 66 71

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 9928 92 53 04

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा
सुमन आनंद
ज्योति सरदाना
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक – मुद्रक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से मुद्रित व 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर– 335001 (राजस्थान) से प्रकाशित

सन्तबानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंह नगर
जिला–श्री गंगानगर (राज.)

हिसाब 4
सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले हिदायतें
(अहमदाबाद)

युक्ति 7
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

सागर मंथन 27
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

सवाल-जवाब 41
सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी. एस.आश्रम राजस्थान)

धन्य अजायब 50
दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 108 | Website : www.ajaibbani.org

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले हिदायतें

हिसाब

अहमदाबाद

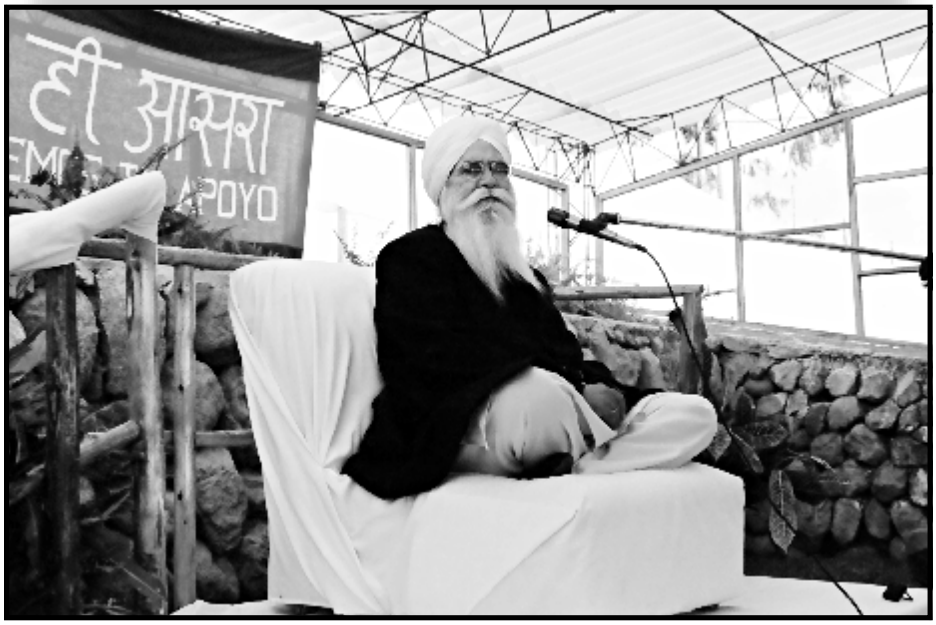

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है, जिन्होंने हम पर दया करके हमें अपनी भक्ति का दान दिया और भक्ति करने का मौका भी दिया। परमात्मा की भक्ति बहुत अमोलक है। हम भक्ति को खेतों में उगा नहीं सकते और न ही इसे बाजार से खरीद सकते हैं। हम भक्ति को केवल पूर्ण गुरु की दया से ही पा सकते हैं।

ऋषियों–मुनियों ने परमात्मा की भक्ति की। वे जब अंदर गए उन्होंने अंदर जो देखा, अपने अनुभवों को वेदों–शास्त्रों में दर्ज कर दिया। सभी ऋषियों–मुनियों ने कहा है, ''जब हम संसार छोड़कर आगे जाते हैं वहाँ परमात्मा ने हमारे कर्मों के **हिसाब** की जिम्मेवारी यमराज को दी हुई है।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जो शिष्य पूर्ण गुरु के पास आ जाते हैं, जिन्हें गुरु स्वीकार कर लेता है और 'नामदान' दे देता है उन्हें अपने हिसाब की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। उनके **हिसाब** का जिम्मेवार गुरु होता है। जिस कागज पर उन आत्माओं का हिसाब लिखा होता है उस कागज को गुरु फाड़ देता है। गुरु नानक साहब भी कहते हैं, ''जिन्हें पूर्ण गुरु स्वीकार कर लेता है उनका यमराज के साथ कोई हिसाब नहीं रहता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस शिष्य को पूर्ण गुरु से 'नाम' मिल जाता है उस शिष्य की भी जिम्मेवारी है कि वह 'शब्द–नाम' की कमाई करे, अपने जीवन को पवित्र बनाए और उसे उस जगह पहुँचना चाहिए जहाँ गुरु अपनी दया बरसा रहा है।''

अगर हम अपने विचार पवित्र रखेंगे तो हमारा मन भी पवित्र होगा अगर हम अपना शरीर पवित्र रखेंगे तो हमारे विचार पवित्र होंगे। जब हमारे विचार पवित्र होंगे तो हमारी आत्मा भी पवित्र होगी फिर हमारे लिए 'शब्द' के साथ जुड़ना बहुत आसान हो जाएगा। लोहे के ऊपर से जंग हटा दिया जाए और फिर उस लोहे को चुम्बक के पास लाएं तो चुम्बक उसे आसानी से खींच लेता है उसी तरह जब हम अपने शरीर, मन और आत्मा को पवित्र करके शब्द के पास ले जाएंगे तो 'शब्द' आसानी से हमारी आत्मा को खींच लेगा। प्रेमी अभी यह भजन बोल रहे थे:

लिख चिट्ठियां सावन नूं पांवां, देर न ला अड़या।
अनामी देश वसेंदया, वतनी आ अड़या।

इसका मतलब बाहरी चिट्ठियों से नहीं है; यहाँ किसी कागज या कलम का जिक्र नहीं है क्योंकि बाहर हम जो कुछ भी गुरु को लिख रहे हैं यह हमारे दिल और दिमाग की बात है। सच्ची चिट्ठी तो रात–दिन सिमरन करना और गुरु की याद में ठंडी आहें भरना है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''अगर हमें यह पता चल जाए कि शब्द–रूप गुरु हमें कितना प्यार करता है तो हम खुशी से नाचने लग जाएं! जैसे सावन के महीने में बादलों को देखकर मोर खुशी से नाचने लगते हैं उसी तरह हमारी आत्मा शब्द की आवाज को सुनकर मस्त हो जाती है, नाचने लगती है; तब हमारी आत्मा से सच्ची अरदास निकलती है:

अजायब दी झांझर का छणकाटा सुणदा जा अड़या।

बाहर के बाजे गाजे पर हमारा मन मस्त होता है लेकिन आत्मा अंदर चल रहे शब्द की आवाज सुनकर मस्त होती है। झांझर का मतलब बाहरी झांझर से नहीं। इस शब्द में उस झांझर का जिक्र है कि मेरी आत्मा की झांझर दिन–रात बज रही है। मेरी आत्मा की यह पुकार है कि मुझे यह मधुर शब्द हर समय सुनाई दे।

प्यारेयो! मैं आपके साथ बैठकर बहुत खुश होता हूँ। परमात्मा सावन–कृपाल ने हम पर बहुत दया की हमें एक साथ अपनी याद में बैठने का मौका दिया। मैं आपको बताना चाहूँगा कि जब आप वापिस अपने घर जाएं और भजन के लिए बैठें तो सबसे पहले पाँच पवित्र नामों को याद कर लें। जब आप भजन पर बैठते हैं तो मन अपना दफ्तर खोलकर बैठ जाता है और आपको दुनियावी चीज़ों में घेर लेता है, जिससे आपका शरीर तो भजन के लिए बैठा होता है लेकिन मन दुनियां के **हिसाब** में फँसा होता है।

भजन पर बैठने से पहले आप अपने सारे जरूरी काम खत्म कर लें ताकि आपको भजन के दौरान उठना न पड़े। कभी भी भजन न छोड़े। भजन–अभ्यास नियमित रूप से करें। भजन को बोझ न समझें, प्यार से करें। आँखें बंद करके अपना भजन शुरू करें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

युक्ति

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने अपार दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया, अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। परमात्मा दया करता है तो सबसे पहले हमें इंसान का जामा देता है फिर और दया करता है तो हमें किसी महात्मा की संगत–सोहबत बख्शता है।

जब हम अपने आप पर दया करते हैं सन्त–महात्माओं के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढ़ाल लेते हैं। परमात्मा ने हमें जिस मकसद के लिए इंसान का जामा दिया होता है, हम सन्त–महात्माओं की बताई हुई **युक्ति** पर चलकर अपने जीवन को सफल बना लेते हैं।

मैं हमेशा बताया करता हूँ कि सभी सन्त–महात्माओं की बानियों में नाम, सतसंग, सतगुरु और वातावरण की महिमा होती है। नाम के बिना मुक्ति नहीं। सतसंग के बिना हमें समझ नहीं आती, दिल में विरह–तड़प पैदा नहीं होती। सतगुरु के बिना हमें 'नाम' के साथ जुड़ने का ज्ञान प्राप्त नहीं होता। अच्छे वातावरण में रहकर ही हम बुराई से बच सकते हैं, 'शब्द–नाम' की कमाई कर सकते हैं।

आज तक जिसे भी समझ आई किसी सन्त–महात्मा की संगत में जाकर ही ठोकर लगी अगर हम बुरे आदमी की संगत में बैठेंगे तो हमारे अंदर बुराईयां आ जाएंगी। शराबी के पास बैठने से शराब पीने की, जुऐबाज के पास बैठने से जुआ खेलने की आदत पड़ जाएगी। चाहे आप किसी निन्दा–चुगली करने वाले के पास दस दिन कितनी भी होशियारी के साथ बैठ जाएं, आपको निन्दा–चुगली करने की आदत पड़ जाएगी; एक दिन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आप भी निन्दा करने लग जाएंगे, परमात्मा की भक्ति से दूर हो जाएंगे इसलिए संगत की महिमा की गई है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

विसर गई सब तात पराई जब ते साध संगत मोहे पाई।
ना कोई वैरी ना ही बेगाना सगल संग हमको बन आई।

सबको देने वाला परमात्मा है। आमतौर पर हम एक–दूसरे को देखकर जलते हैं जबकि हर किसी का अपना पिछला कर्म होता है। हम जब महात्मा की सोहबत में जाते हैं तो हमारे अंदर से ईर्ष्या खत्म हो जाती है कोई पराया नज़र नहीं आता क्योंकि सबके अंदर परमात्मा है अगर निन्दा करते हैं तो परमात्मा की ही करते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा सबके अंदर इस तरह समाया हुआ है जिस तरह दूध के अंदर घी। मेहन्दी के पत्तों के अंदर रंग। तिल के अंदर तेल और फूलों के अंदर खुशबू है लेकिन हम उसे देख नहीं सकते। दूध में से घी प्राप्त करने के लिए हमें किसी से ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है।''

तजुर्बेकार समझाता है कि दूध को गर्म करके जामन लगाना है फिर उसे बिलोकर मक्खन निकालकर मक्खन को गर्म करके उसके अंदर से घी निकलना है। दूध के अंदर नमक गल जाता है घी के अंदर नमक नहीं गलता। दूध से पूरियां नहीं पकाई जातीं लेकिन घी से पकाई जाती हैं। जब हम **युक्ति** से घी प्राप्त कर लेते हैं तो हमें पता लगता है कि घी दूध के अंदर ही होता है लेकिन घी प्राप्त करने के लिए यत्न करना पड़ता है।

आपके आगे कबीर साहब का शब्द रखा जा रहा है। आप इस शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाएंगे कि हमने महात्मा के पास क्यों जाना है? हम किस तरह अपने घर को भूल गए हैं? महात्मा किस तरह हमें हमारे घर की याद दिलाते हैं:

बिन सतगुर नर रहत भुलाना, खोजत फिरत राह नहिं जाना।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब कहते हैं, ''परमात्मा हमारे अंदर है लेकिन जब तक कोई पूर्ण महात्मा हमें **युक्ति** न बताए तब तक हम परमात्मा से मिलाप नहीं कर सकते। जिस तरह दूध के अंदर घी होता है लेकिन जब तक कोई तजुर्बेकार हमें **युक्ति** न बताए तब तक हम घी प्राप्त नहीं कर सकते।''

महाराज सावन सिंह जी एक छोटी सी दिलचस्प कहानी सुनाया करते थे कि किसी के घर एक मेहमान आया उसने पहले कभी दूध नहीं पिया था। वह जिस घर में आया उस घर के लोगों के पास गाय थी। उन्होंने मेहमान को दूध गरम करके उस दूध में चीनी डालकर पीने के लिए दिया। मेहमान को दूध बहुत अच्छा लगा। मेहमान ने अपने मन में सोचा! मैं भी गाय खरीदकर अपने घर में रखूं, फिर मैं भी ऐसा मीठा दूध प्राप्त करूंगा।

मेहमान ने उन लोगों से कहा कि आपकी गाय में बहुत गुण है आप मुझे अपनी गाय बेच दें। उन लोगों ने मेहमान को वह गाय बेच दी लेकिन मेहमान ने न तो गाय को दुहते हुए देखा और न चारा खाते हुए देखा। वह गाय घर लाकर अपनी पत्नी से उस गाय की प्रशंसा करने लगा।

जो जमींदार लोग गाय रखते हैं, वे जानते हैं कि गाय को बछड़े से प्यार होता है। गाय अपने जिस्म में से दूध को अपने थनों में ले आती है। उस समय वह पेशाब वगैरहा भी करती है और बछड़े को चाटकर खुशी जाहिर करती है। मेहमान ने कभी गाय के थनों से दूध प्राप्त नहीं किया था। जब गाय पेशाब करने लगी तो मेहमान ने बाल्टी गाय के नीचे रख दी कि शायद यही दूध है और दूध बछड़े ने पी लिया। वह उस बाल्टी को लेकर अपनी पत्नी के पास गया उसने गर्म किया।

हमें पता है कि पेशाब में आप चाहे कितनी भी चीनी डाल लें वह खारा ही रहेगा मीठा कैसे हो सकता है? मेहमान गाय को उसके मालिक के पास ले गया कि भाई! तूने हमारे साथ ठग्गी की है। उस दिन तुमने मुझे जो चीज पिलाई थी वह बहुत मीठी और स्वाद थी। उसने पूछा कि आपने गाय को

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

किस तरह दुहा था उस बेचारे ने जैसे गाय दुही थी वैसे ही बता दिया। गाय के मालिक ने कहा, ''मैं आपके घर एक–दो दिन रहता हूँ। उसने गाय को अच्छा चारा खिलाया वह बछड़े का मुँह भी थन से लगवाता था उसने गाय का दूध निकालकर उन्हें पिलाया।'' मेहमान ने कहा कि तूने मुझे गाय तो दी थी लेकिन दूध निकालने की **युक्ति** नहीं बताई थी।

हमारी भी यही हालत है परमात्मा हमारे अंदर है। हम वेदों–शास्त्रों में भी यही सुनते हैं कि परमात्मा को मिलने से हमारी आत्मा को शान्ति आ जाती है, हमारे दिल की भटकना खत्म हो जाती है लेकिन हमें यह नहीं पता कि हमें परमात्मा से किस तरह मिलना है? हम परमात्मा से मिलने के लिए कई बार जिस्म पर भगवे कपड़े पहनते हैं, कान फड़वा लेते हैं, जिस्म पर राख लगा लेते हैं और जोश में आकर घर–बार, पुत्र–पुत्रियों को छोड़कर जंगलों–पहाड़ों में चले जाते हैं।

आजकल बहुत से साधु सर्दी में दिसम्बर–जनवरी के महीने में सिर के ऊपर सौ घड़ों से ज्यादा ठंडे पानी की धार डालते हैं। गर्मी में जून के महीने में दोपहर के बारह बजे चारों तरफ आग जला लेते हैं जबकि सिर के ऊपर पाँचवी आग सूरज की होती है। जिस्म पर कोई कपड़ा नहीं होता सिर्फ आँखों पर कपड़ा रखते हैं ताकि आँखों को सेक न पहुँचे; यह एक बहुत कठिन तपस्या है।

मैंने ये दोनों साधनाएं की हैं। मैं जानता हूँ कि ये कितनी सख्त साधनाएं हैं लेकिन 'प्यार' प्यार होता है। हम प्रेम में बोझ नहीं समझते ऐसा हम प्रभु को प्राप्त करने के लिए करते हैं क्योंकि हमें उस **युक्ति** का ज्ञान नहीं कि वह प्रभु कहाँ रहता हैं और उससे कैसे मिलना है?

जगन्नाथ समुद्र के किनारे है। अरब में मक्का है। अमरनाथ गुफा की यात्रा बहुत लम्बी और कठोर है। पहाड़ियों में पंजा साहब, हसन अब्दाल है। हम इतनी लम्बी और मुश्किल यात्राएं सिर्फ परमात्मा को प्राप्त करने के

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लिए करते हैं ताकि हमें शान्ति मिले। इन यात्राओं को करने में कई–कई महीने लग जाते हैं, बहुत पैसा खर्च होता है अगर कोई **युक्ति** बताने वाला गुरु मिल जाए तो जितना समय हम यात्राएं करने में लगाते हैं उतने समय में अंदर बहुत चढ़ाई कर सकते हैं।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं कि जब कोई **युक्ति** बताने वाला सतगुरु, पूर्ण सन्त मिल जाता है और हम उसके उपदेश पर चलते हैं तो हमारे दिल की भटकना समाप्त हो जाती है।

केहर-सुत ले आयो गडरिया, पालपोस उन कीन्ह सयाना।।
करत कलोल रहत अजयन संग, आपन मर्म उनहुं नहिं जाना।।

कबीर साहब एक बहुत अच्छी मिसाल देकर समझाते हैं कि एक शेर का बच्चा जंगल में भेड़ें चराने वाले गड़रिए को मिल गया। गड़रिये ने शेर के बच्चे को भेड़ों का दूध पिलाकर उसे बड़ा किया। वह बच्चा भेड़ो में रहकर हंसने–खेलने लगा और बड़ा हो गया।

एक दिन जंगल में शेर आ गया। शेर यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि शेर का बच्चा भेड़ों में फिर रहा है। शेर ने उस बच्चे को बहुत प्यार से समझाया कि तू शेर है; भेड़ों में क्यों फिर रहा है लेकिन वह मानने के लिए तैयार नहीं हुआ क्योंकि वह उन गड़रियों में ही पलकर बड़ा हुआ था। उस बच्चे ने कहा, ''मैं तो भेड़ हूँ।'' शेर ने कहा ठीक है तू मेरे साथ दरिया पर चल। जब वे दोनों दरिया पर गए तो शेर ने बच्चे से कहा, ''देख! तेरी–मेरी शक्ल एक जैसी नहीं?'' उस बच्चे ने कहा कि हाँ हम दोनों की शक्ल तो एक जैसी है। शेर ने कहा कि मैं गरजता हूँ तू भी गरज। जब बड़ा शेर गरजा उसकी नकल करके छोटा बच्चा गरजा तो भेड़ें तो भागनी ही थी उनकी गरजना सुनकर गड़रिया भी भाग गया। शेर के बच्चे ने अपने ऊपर रखा हुआ सामान फेंक दिया और वह जंगल का राजा बन गया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब मिसाल देकर समझाते हैं, ''हम भी इस काल के राज्य में आ गए हैं। भेड़ें मन–इन्द्रियां हैं। गड़रिया हमारा मन है। आत्मा शेर का बच्चा है। आत्मा इन इन्द्रियों के भोगों में फँसी हुई है और मन दिन–रात इनके साथ खेलकर इन्हें चरा रहा है; अपने घर का पता नहीं बताता।'' पूर्ण महात्मा परमात्मा के हुक्म में आता है। महात्मा आत्मा से कहता है कि हे आत्मा! तेरा खसम–खसाई मन नहीं। तू जिस घर की रखवाली कर रही है यह तेरा घर नहीं। तेरा घर सच्चखंड है तू सच्चखंड की रहने वाली है, लेकिन हम महात्माओं के संदेश को सुनने के लिए भी तैयार नहीं।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त–महात्माओं का उपदेश यह नहीं होता कि हम इन्हें अभ्यास में फँसाएं, ये रोज ही कोल्हू के बैल की तरह चक्कर लगाते रहें। महात्माओं की इच्छा तो यही होती है कि आओ करो और चलो। कोई भाग्यशाली ही दिन–रात गुरु परमात्मा की इंतजार करता है।

जब प्यासे को पानी मिलता है तो प्यासा यह नहीं पूछता कि यह पानी हिन्दू का है या मुसलमान का है? वह तो पानी पीकर प्यास बुझाएगा। प्यास न लगी हो तो हम हजारों नखरे करते हैं कि क्या यह पानी अच्छा है, हिन्दू का है या मुसलमान का है? जिसके दिल में परमात्मा से मिलने की चाहत है वह महात्मा से यह नहीं पूछता कि तेरी जाति क्या है? तू कहाँ रहता है?

मैं बचपन से उसकी याद में था, वह खुद ही आया। महाराज कृपाल सदा यही कहते रहे, ''परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं इंसान बनना मुश्किल है क्योंकि भगवान इंसान की तलाश में होता है।'' एक बन्दा बन्दा नहीं बनता और एक बन्दा भगवान बन जाता है। बन्दा उसे कहा गया है जो पवित्र बर्तन है उसका तन भी पवित्र है और मन भी पवित्र है। उसने अपना धन भी साध–संगत में लगाकर पवित्र किया होता है। जब हम ऐसे बन्दे के पास जाते हैं तो मन में उबाल उठता है। हम जानते हैं कि 'नाम' लेकर भी कोई भाग्यशाली जीव ही गुरु से गुरु को माँगता है। कबीर साहब कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दुनियां ऐसी दीवानी भाई भक्ति भाव नहीं बूझे जी।
कोई आए तो बेटा मांगे यही गौसाईं दीजे जी।
कोई आए तो दुख का मारया हम पर कृपा कीजे जी।
कोई आए तो दौलत मांगे भेट रूपया लीजे जी।
सच्चे का कोई ग्राहक नाहीं झूठे जगत पतीजे जी।
कहत कबीर सुनो भई साधो अंधे को क्या कीजे जी।

गुरु सबको चाहता है कि ये मन इन्द्रियों की गुलामी से ऊपर आएं। क्या हम गुरु को चाहते हैं? हम अपनी सारी समस्याएं गुरु के आगे रख देते हैं और गुरु से कहते हैं, ''तू मेरी बीमारी दूर कर। सबक भी तू याद कर और डिग्री भी तू ही दे हमारे लिए पढ़ना मुश्किल है।''

गुरु सबको चाहे गुरु को चाहे न कोए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''शिष्य की भी कुछ डयूटी होती है, शिष्य अपनी जिम्मेवारी पूरी करे गुरु बेइंसाफ नहीं।''

जब सन्त हमें हमारे घर का पता बताते हैं अगर हम उनकी बात नहीं मानते तो वह हमें दुनियावी मिसालें देकर समझाते हैं ताकि हमें एक मिसाल नहीं तो दूसरी मिसाल समझ आए। इसलिए कबीर साहब ने शेर के बच्चे की मिसाल दी है जैसे शेर ने अपने बच्चे को दरिया पर ले जाकर पानी में उसकी शक्ल दिखाकर उससे बुलवाया।

इसी तरह सन्त–सतगुरु भी हमें कहते हैं कि आप सिमरन के जरिए मन इन्द्रियों की गुलामी से आजाद होकर हमारे साथ आएं। उस आवाज को पकड़कर सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से ऊपर आएं। आप अपने आपको पहचानकर देखें! आपको जो पांच डाकू दिन–रात जलील कर रहे हैं ये आपके दास बन जाएंगे।

केहर ईक जंगल से आयो, ताहि देख बहुते रिसियाना।।
पकरि के भेद तुरत समुझाया, आपन दसा देख मुसक्याना।।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब शेर ने उस बच्चे को दरिया पर ले जाकर कहा कि देख क्या तू मेरे जैसा नहीं? जब उस बच्चे ने अपने आपको शेर जैसा देखा और वह गरजा तो सब भाग गए फिर वह मुस्कुराता है कि मैं तो ऐसे ही भूला रहा।

इसी तरह सन्त आत्मा से कहते हैं कि तू शेर की बच्ची है, तुझे यह मन गड़रिया चराता फिरता है। कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ तो कभी मोह और अहंकार की अग्नि खींचकर ले जाती है; ये एक–दूसरे के पीछे लगी हुई है। तू देख तो सही तेरा परमात्मा कितना बड़ा है, तेरा घर सच्चखंड शान्ति का देश है फिर जब हम अंदर जाते हैं तो हमारे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है लेकिन पछताते भी हैं कि परमात्मा तो हमारे अंदर था हमने ऐसे ही कान फड़वाए, धूनियां तपाकर अपने शरीर को जलाते रहे।

जसकुरंग बिच बसत बासना, खोजत मूढ़ फिरत चौगाना।।
कर उपवास मन में देखै, यह सुगंधि धौं कहाँ बसाना।।
अर्ध उर्ध बिच लगन लगी है, छक्यो रूप नहिं जात बखाना।।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, उलटि आपु में आपु समाना ।।

कबीर साहब ने मृग की मिसाल दी है। इसे कस्तूरा भी कहते हैं इसकी नाभि में कस्तूरी होती है। जब महक आती है तो यह झाड़ियों को सूंघता है। जिस तरफ से हवा आती है यह उसी तरफ दौड़ता है। जब यह टिक जाता है तो इसे ज्ञान हो जाता है कि महक मेरे अंदर ही है। न घर–बार छोड़ने की जरूरत है न बच्चों को छोड़ने की जरूरत है न जिस्म पर कोई खास किस्म के कपड़े पहनने की जरूरत है। गुरु अर्जुनदेव कहते हैं:

कोई ओडे नील कोई पहने सफेद ।

चाहे कोई नीले कपड़े पहने चाहे सफेद कपड़े पहने मकसद तो परमात्मा के भेद को पहचानने का है। हमने अपने आपको पहचानना है और अपने आपमें ही समा जाना है। महात्मा हमारे ऊपर दया करके हमें सिमरन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बताते हैं हम सिमरन के जरिए फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं तो हमें कुछ हौंसला होता है कि हमारा सफर शुरू हो गया है; एकाग्र होने पर रस आना शुरू हो जाता है।

स्थूल देश में स्थूल इन्द्रियां हैं। जब हम स्थूल पर्दा उतारकर सूक्ष्म देश में जाते हैं तो स्थूल मन हमें अंदर नहीं जाने देता बाहर ही बाहर रखता है। सूक्ष्म में सूक्ष्म मन है जो हमें आगे नहीं जाने देता वहाँ भी सूक्ष्म भोग हैं। कारण देश में कारण इन्द्रियां कारण भोग हैं। जब हम इससे ऊपर चले जाते हैं आत्मा से सारे पर्दे उतार लेते हैं पारब्रह्म में जाकर हमारी आत्मा को होश आती है कि मैं तो आत्मा हूँ; मैं ऐसे ही दुनियां के विषय–विकारों के जंगल में भूली रही। ब्रह्म में जाकर मन को होश आ जाता है कि मैं तो ब्रह्म का अंश था, कहाँ भूला फिरा? चाहे आप इसे रूह और मन की गाँठ खुलनी कह लें, चाहे मन को आत्मा से अलग करना कह लें। मन ब्रह्म में रह जाता है, आत्मा ऊपर अपने घर में चली जाती है। अब न मन को चैन है न आत्मा को चैन है।

बिन सतगुर नर भरम भुलाना, बिन सतगुर नर भरम भुलाना
सतगुर सब्द का मर्म न जाना, भूलि परा संसारा।।
बिना नाम जम धरि धरि खेहै, कौन छुड़ावनहारा।।

कबीर साहब ने ऊपर शब्द में यही कहा है कि हम गुरु के बिना भ्रम में फिरते हैं। हम जो कुछ इन आँखों से देखते हैं कि मेरी इतनी जायदाद है, मेरे बाल–बच्चे हैं। मैं बड़े मुल्क का बादशाह हूँ, मैं इतनी फौजों का मालिक हूँ। यह सब भ्रम है, यह स्वप्न की तरह है।

एक राजा था, उसकी रानी को 'नाम' मिला हुआ था। राजा को 'नाम' नहीं मिला था। हम जानते हैं कि घर में जिसे 'नाम' मिला होता है वह घर के लोगों को समझाता है कि 'नाम' जपना अच्छा है, लेकिन अपने–अपने

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कर्म होते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''उन लोगों से अगर नाम के बारे में बात करें तो उन्हें ऐसा दर्द होता है जैसे बिच्छू ने काट लिया हो, वे लोग बहुत गुस्सा करते हैं।''

रानी अक्सर राजा से कहती कि तू सिमरन किया कर। राजा ने कहा कि तू मुझे रोज ही ऐसा कहती है मैं तुझे संगत में नहीं जाने दूंगा। एक दिन रानी ने गुस्से में आकर राजा से कहा, ''तू मूर्ख है। एक दिन यह देह छूट जाएगी यम तुझे पकड़ लेंगे तू परमात्मा के दरवाजे पर कैसे जाएगा?'' राजा ने सोचा! रानी मुझे रोज सिमरन करने के लिए कहती है। आज इसने मुझे मूर्ख कहा है हो सकता है इसमें कोई राज़ हो? कभी–कभी कोई बात दिमाग में बैठ भी जाती है।

राजा ने वजीर से कहा कि मुल्क में से सारे मूर्ख बुला लिए जाएं। ढ़िढोरा पिटवाया गया कि जो सबसे ज्यादा मूर्ख है उसे राजा ईनाम देगा। ईनाम पाने के लिए मूर्खों ने राजदरबार में आकर राजा को अपने–अपने करतब दिखाए। उनमें से राजा को जो सबसे ज्यादा मूर्ख लगा राजा ने उसे सोने की छड़ी देकर कहा, ''यह छड़ी बहुत कीमती है। जब तुझे कोई अपने से ज्यादा मूर्ख मिल जाए तो तू उसे यह छड़ी दे देना।'' मूर्ख ने कहा ठीक है और वह छड़ी लेकर चला गया।

जब राजा का अंत समय आया उसने नौकर को भेजा कि उस मूर्ख को बुलाकर लाओ। वह मूर्ख छड़ी लेकर आ गया। राजा ने उससे कहा, ''तू अभी तक यह छड़ी लेकर फिर रहा है?'' मूर्ख ने कहा, ''अभी तक मुझे अपने से ज्यादा कोई मूर्ख नहीं मिला।'' राजा ने मूर्ख से कहा, ''मेरा अंत समय आ गया है लेकिन तूने मेरे जीते जी अपने से ज्यादा मूर्ख नहीं ढूंढा?'' मूर्ख ने राजा से पूछा कि अंत समय में आपने कहाँ जाना है? राजा ने कहा, ''मुझे मरना है मुझे पता नहीं कि मैं मरकर कहाँ जाऊंगा मैं फिर इस संसार में नहीं आऊंगा।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मूर्ख ने राजा से कहा, ''क्या आपके साथ धन–पदार्थ, बाल–बच्चे या कोई पलटन भी जाएगी?'' राजा ने कहा कि इनमें से कोई भी मेरे साथ नहीं जाएगा। मूर्ख ने फिर पूछा जिन पर आपका हुक्म चलता है क्या ये आपकी मदद करेंगे? राजा ने कहा बिल्कुल नहीं। मूर्ख ने कहा, ''राजा जी! आप यह छड़ी ले लें मुझे आपसे ज्यादा मूर्ख कोई नहीं मिला क्योंकि जब हुकूमत, धन–दौलत और पलटन में से कोई भी आपके साथ नहीं जाएगा फिर भी आप इनके मोह में बंधे रहे और आपने मालिक को बिसार दिया। आपने कोई ऐसा तो ढूंढना था जो आपके साथ जाता।''

सोने की छड़ी 'नाम' है। गुरु को ढूंढना था जिसका परवाना पाकर यम कुछ नहीं कहता। हम दूसरों को तो मूर्ख कहते हैं लेकिन हम सबसे बड़े मूर्ख हैं। कबीर साहब कहते हैं कि गुरु के बिना यह जीव भ्रमता है। क्या नाम के बिना हमें कुटुम्ब से, दोस्तों से कोई छुड़ाने वाला है? यह सवाल अपने आपसे होता है।

मेरा बचपन से यही सवाल था। मैं आमतौर पर अपने बचपन की कहानी सुनाया करता हूँ कि हम जिस रास्ते से निकला करते थे वहाँ एक बूढ़ा बैठा होता था उसका कूबड़ निकला हुआ था। हम कई बार उसकी छड़ी खींच लेते, वह उठ नहीं सकता था। कुछ समय बाद वह बूढ़ा संसार छोड़कर चला गया। मैंने अपनी माता से पूछा कि यहाँ एक बूढ़ा बैठा होता था? माता ने कहा, ''भाई! वह मर गया।'' मैंने माता से पूछा कि मरते कैसे हैं? क्योंकि इससे पहले किसी को भी मरते हुए नहीं देखा था। माता ने कहा, ''बेटा! मैं तुझे बता तो सकती हूँ लेकिन फिर तुझे माता नहीं मिलेगी।'' क्योंकि वह मरकर ही बता सकती थी।

दूसरे दिन मैंने परिवार के सब सदस्यों की मिट्टी की ढ़ेरियां बनाई और एक–एक से सवाल किया कि क्या कोई मेरे साथ जाएगा या मुझे छुड़वाएगा या फिर मैं भी उस बूढ़े की तरह अकेला ही जाऊंगा?

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्यारेयो! अगर हम गौर से आत्मा की आवाज सुनें तो आत्मा सही जवाब देती है। अंदर से यही जवाब आया कि तेरे साथ कोई नहीं जाएगा। मैंने सब ढ़ेरियां गिरा दीं लेकिन एक ढ़ेरी नहीं गिराई जिसका मुझे पता नहीं था जिसे मैं गैबी ताकत कहता था।

मेरे पिता जी यह सब देख रहे थे उन्होंने मुझसे पूछा, ''तू यह सब क्या कर रहा था?'' अगर छोटा बच्चा ऐसा करे तो माता–पिता की तवज्जो उसकी तरफ हो जाती है, वे पूछ भी लेते हैं। मैंने उन्हें बहुत प्यार से बताया, ''अगर मैं मर गया तो आपमें से कोई मुझे छुड़वाएगा? मैंने सुना है कि मौत के समय बहुत कष्ट होता है।'' दुनियादारों के पास कोई जवाब नहीं होता। मेरे पिता जी ने कहा कि मैंने तेरे लिए कितना कुछ बनाया है तेरी इतनी जायदाद है। मैंने खड़े–खड़े ही थूक दिया कि जायदाद साथ नहीं जाएगी, यह शरीर भी साथ नहीं जाएगा।

कबीर साहब कहते हैं कि 'नाम' के बिना यम गला दबा देता है। आपने कभी साँप को मारते हुए देखा है उसका सिर दबाकर बैठ जाते हैं। वह बेचारा तड़फता है हमारी हालत भी इससे कम नहीं होती। आप जीते जी कमाई करके देख सकते हैं क्योंकि आत्मा ने उन रास्तों से निकलना होता है जहाँ यम कष्ट देते हैं।

आप राजा जनक की कहानी पढ़ते हैं, उसने किस तरह जीवों की चीख पुकार सुनकर अपना ढ़ाई घड़ी का सिमरन देकर उन्हें छुड़वाया था। प्यारेयो! आप करके देखें। गुरु के बिना 'नाम' नहीं मिलता, गुरु के बिना आपको कोई छुड़वाने वाला नहीं है।

सिरजनहार का मर्म न जाने, धृग जीवन जग तेरा।।

कबीर साहब कहते हैं कि ऐसे जीवन को लानत है कि इंसान का जामा पाकर परमात्मा की तरफ तड़फ नहीं बनी। परमात्मा की याद में दस मिनट सच्चे दिल से नहीं बैठा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

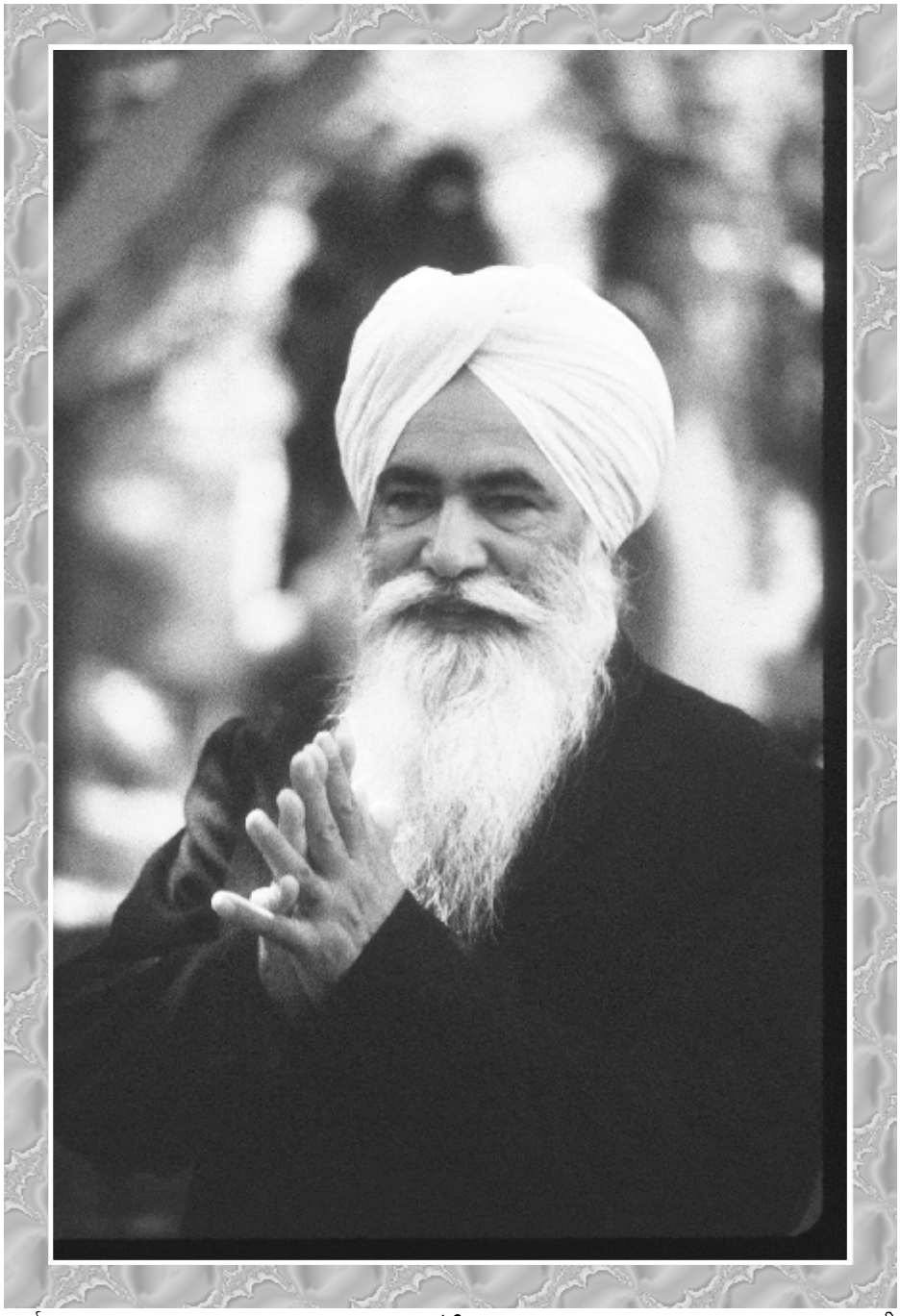

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मत जाणों तुम ओह जीवंदे ओह जाणों मार करतार।

जो मालिक की भक्ति नहीं करता उसे जीते हुए मरा हुआ ही समझें। वह करतार का मारा हुआ है। सहजो बाई कहती हैं, ''वे लोग इस तरह साँस लेते हैं जैसे लुहार की धौंकनी के अंदर जान नहीं होती लेकिन उसमें से फूँक निकलती है।'' इसी तरह हम लुहार की धौंकनी की तरह दिन–रात साँस तो लेते हैं जो किसी लेखे में नहीं।

धरमराय जब पकरि मंगेहै, परिहै मार घनेरा।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब धर्मराय ने तेरा हिसाब मँगवा लिया तब तुझे कौन छुड़वाएगा? वह तुझे तेरे कर्मों के मुताबिक नर्कों में भेज देगा, तू वहाँ दुख उठाएगा।''

बहुत से प्रेमियों के पत्र आते हैं। उनके पत्र पढ़कर दिल हिल जाता है। वे लिखते हैं कि हमने ऐसे कौन से कर्म किए थे? प्यारेयो! आप अपने अड़ोस–पड़ोस में निगाह मारकर देखें! हमने बिना सोचे समझे दिन–रात बुराईयों की तरफ कमर कसी हुई है; ये कर्म हमने ही भोगने है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

खेत शरीर जो बीजया सो अंत खलोया आए।

हम एक जन्म में कर्म करते हैं और दूसरे जन्म में उन कर्मों को भोगने के लिए आ जाते हैं। बहुत से कर्म हम इस जन्म में भी भोगते हैं। जैसे आप देखते हैं कि हम किसी को डंडा मारते हैं, गाली देते हैं तभी उसका फल मिल जाता है। ऐसे बहुत से अच्छे और बुरे कर्म हैं जिनका हमें तुरंत ही फल मिल जाता है। कबीर साहब कहते हैं:

किए पाप रखे तले दबाऐ प्रकट भए नादान जब पूछे धर्मराय।

अब तो तूने यहां लीपा–पोची कर ली। कहता है कि मैंने तो कुछ किया ही नहीं। मैं कुछ दिन पहले साँपला गया वहाँ अंग्रेजो ने इसी तरह का

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सवाल किया तो मैंने उनसे कहा कि हम अखबारों में पढ़ते हैं जिसमें लोग कहते हैं कि मैंने इतना दान–पुण्य किया है। कई लोग मिलते हैं जो यह कहते हैं कि मैंने इतना दान–पुण्य किया है इतने लोगों का फायदा किया है लेकिन कोई ऐसा नहीं मिला जो यह कहता हो कि मैंने इतने पाप किए हैं।

हम संसार में पाप और पुण्य का फल भोगते हुए देखते हैं। जो लोग आज अच्छे बंगलों में रह रहे हैं हवाई जहाजों में सफर कर रहे हैं उन्होंने पहले अच्छे पुण्य किए हैं वे उन पुण्यों का ईनाम भोग रहे हैं। ऐसे भी हैं जिनकी टांगे नहीं वे सड़क पर चल भी नहीं सकते। आप सड़क पर बैठे हुए कोढ़ियों की हालत भी देखते हैं; क्या वह नर्क नहीं भोग रहे? यह तो अपनी–अपनी नज़र है कि हम किस नज़र से देखते हैं!

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''किसी को किसी का कर्म नहीं मिलता। हमने जो किया है वही भोगना है। हम गेहूँ बीजेंगे तो गेहूँ काटेंगे अगर मिर्च बीजेंगे तो मिर्च काटेंगे।'' जब धर्मराय पूछेगा तो सब कुछ सिनेमा की स्क्रीन की तरह साफ दिखाई देगा; उसे किसी की गवाही की जरूरत नहीं।

सुत नारी को मोह त्यागि के, चीन्हो सब्द हमारा।।

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''आप बेटे–बेटियों से मोह त्यागें और 'नाम' के साथ मोह बढ़ाएं। हमारी यह हालत है कि हम जैसे–जैसे बूढ़े होते हैं मन, इन्द्रियां जोर डालती हैं हम माया के पदार्थों और बेटे–बेटियों के मोह में ज्यादा मस्त हो जाते हैं। 'शब्द–नाम' मोह को तोड़ता है अगर हम नाम जपें तो इनमें से मोह निकल जाता है।'' बच्चे बुलाने पर भी जवाब नहीं देते लेकिन हम कहते हैं कि हमने बच्चे बहुत मुश्किल से लिए हैं। आप देखते हैं कि बूढ़े लोग जो करते हैं?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस तरह मक्खी शहद के किनारे बैठकर शहद खा लेती है और खुश्क परों से उड़ भी जाती है। जो

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

मक्खी शहद के बीच में बैठ जाती है वह न तो शहद खा सकती है न उड़ सकती है, पर निकालती है तो पैर फँस जाते हैं पैर निकालती है तो पर फँस जाते हैं। हम दुनियादारों की भी यही हालत है ये न खुद सुखी हैं और न ही अपने परिवार को और पड़ोसियों को सुखी रहने देते हैं।''

कबीर साहब प्यार से कहते हैं, ''आप 'शब्द–नाम' की कमाई करें अपने घर में सुख से रहें और अपने बच्चों को भी चार दिन सुख का साँस लेने दें। 'शब्द–नाम' की कमाई करने से आपको पता लगेगा कि किस तरह मोह अपने आप ही उड़ जाता है।''

सार सब्द परवाना पावो, तब उतरो भव पारा।।

कबीर साहब कहते हैं, ''गाने–बजाने, लिखने–पढ़ने और बोलने वाला शब्द आपको यमों से नहीं छुड़वाएगा। 'सार–शब्द' सच्चखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारें दे रहा है यह 'शब्द' लिखने पढ़ने और बोलने में नहीं आता।'' गुरु गोविन्द सिंह जी कहते हैं:

वेद कतेब न भेद लिखयों जो गुरु ने गुर मोहे बतायो।

आप कहते है कि 'सार–शब्द' का भेद मुझे वेद–कतेब पढ़ने से नहीं मिला वह भेद मुझे गुरु से मिला था।

इक मत ह्वै के चढ़ो नाव पर, सतगुर खेवनहारा।।

मैंने कल भी कबीर साहब की मिसाल देकर समझाया था आज भी कबीर साहब यही कह रहे हैं, ''नाम का बेड़ा परमात्मा ने खुद बनाया है। परमात्मा ने यह बेड़ा अपने प्यारे बच्चे सन्तों को सौंपा है। सन्त इस बेड़े के मल्लाह हैं जो लोग पक्के मन से दृढ़ विश्वास के साथ इस बेड़े में बैठ जाते हैं सन्त उन्हें भंवरजाल से बचाकर पार ले जाते हैं। जो डाँवाडोल मन से इस बेड़े में बैठते हैं वे भंवरजाल में यहाँ गोते खाते फिरते हैं।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कबीर साहब कहते हैं अगर भाग्य से गुरु मिल जाए! नाम मिल जाए! तो आप 'नाम' के बेड़े में पक्के इरादे से बैठ जाएं। उस बेड़े का मल्लाह गुरु के बिना और कोई नहीं। आप यह न समझें कि नाम का बेड़ा कोई और चलाएगा। जिसने आपको नाम के बेड़े पर चढ़ाया है वहीं जिम्मेवार है। वह आपको भवसागर की लहरों से बचाकर ले जाएगा, जो लोग कमाई करते हैं उन्हें जीते जी तसल्ली हो जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मोया जित घर जाईए, तित जीवेंदया मर मार।

आपने मरकर जहाँ जाना है वहाँ जीते जी भी जाकर देख सकते हैं, वह सच्चखंड है जहाँ परमात्मा बसता है।

महाराज कृपाल ने एक बार अकेले में मुझे बड़े प्यार से यह वचन बताया कि वे और डॉक्टर जॉनसन एक दिन रात के समय परमात्मा सावन के चरणों को दबा रहे थे। आपने चरण दबाते हुए पूछा, ''महाराज जी! अंदर किस तरह है?'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''देख कृपाल सिंह! अंदर ऐसा ही सब कुछ होगा।'' स्वामी जी महाराज कहते हैं:

जब जीव शरण गुरु की आवे, कर्म धर्म सब भ्रम नसावे।
जो मार्ग गुरु देई बताई, सोई कर्म धर्म हुआ भाई।

पहले आपने चाहे कितने ही जंगल, पहाड़, मढ़ी, मसान पूजे हों 'नाम' मिलने के बाद आप इन सबको ठप्प करके रख दें। आपको जो रास्ता गुरु ने दिया है, वही आपका कर्म है वही धर्म है। 'नाम' को इस तरह पकड़ लें जिस तरह औरत का पालन–पोषण जिस घर में होता है वह उन सबको छोड़कर अपने पति से प्यार करती है, हमेशा अपने पति की सेवा करके खुश होती है। वह सेवा तो घर में सभी लोगों की करती है लेकिन उसका जातीय सम्बंध केवल पति के साथ ही होता है। ऐसा न हो कि गंगा गए तो गंगाराम, यमुना गए तो यमुनादास बन गए। कभी मढ़ी के आगे जाकर माथा टेका, कभी कब्रों को भी मानने लगे, तो कभी तीर्थों पर भी जाने लगें।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस औरत के बत्तीस खसम हैं वह किस–किसको खुश करेगी? सारी जिंदगी में एक महात्मा के साथ प्यार बन जाए तो बेड़ा पार है। आखिर वही आपकी आँखों के आगे आएगा जिसके साथ आपका प्यार है।''

साहेब कबीर यह निर्गुन गावैं, संतन करो बिचारा।।

कबीर साहब ने इस शब्द में हमें बड़े प्यार से समझाया है कि जब तक हम पूर्ण महात्मा से नहीं मिलते हम भ्रम में हैं। आपने मिसाल देकर बताया कि शेर के बच्चे को गड़रिया पकड़कर ले गया उसे भेड़ों में ही पालता रहा वह बच्चा उन्हीं में रहकर खुश था। शेर ने **युक्ति** से उस बच्चे को दरिया पर ले जाकर उसकी शक्ल दिखाई फिर उस बच्चे से कहा कि जैसे मैं गरजता हूँ तू भी गरज।

महात्मा प्यार से कहते हैं कि शेर का बच्चा आत्मा है, गड़रिया मन है। भेड़ें इन्द्रियां हैं यह इन्हीं के बीच रहकर खुश है। जब इसे शेर मिल जाता है तो वह इसे बताता है कि तू मेरी तरह गरज तेरी शक्ल मेरे जैसी है। इसी तरह परमात्मा अपने प्यारे सन्तों को संसार में भेजता है वह आकर हमें बताते हैं कि परमात्मा आपके अंदर है, आप अंदर चलकर देखें तो सही!

मैं बताया करता हूँ कि सन्त–महात्मा बेशक बने बनाए बर्तन होते हैं फिर भी हम भूले हुए जीवों को **युक्ति** समझाने के लिए कहते हैं कि आओ! मैं भी बैठता हूँ आप भी बैठें। देखें और एक मत हो जाएं।

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर तब होए।
कहे कबीर तह पलक तो पलक न पावे कोए।

जब आप अभ्यास पर बैठते हैं तो सबसे पहले अपने तन को स्थिर करें तन न ज्यादा अकड़ा हो न ढ़ीला हो। ढ़ीला होने से नींद आएगी और अकड़ा हुआ होगा तो ज्यादा समय बैठ नहीं सकेंगे। ऐसा नहीं कि अभ्यास

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर बैठे हुए कभी इधर हिलें तो कभी उधर हिलें। कभी घर के बारे में तो कभी कारोबार के बारे में सोचते हैं। जिस मन को समझाने में लगे हैं उसे स्थिर करें ऐसा न हो कि आपका मन बाजारों की सैर करे और आप मौज से बैठे हों। कबीर साहब कहते हैं:

मन दिया कहीं और को तन साधा के संग।
कहे कबीर कैसे लगे कोरी गज्जी रंग।

हम तन को तो साधु के पास बिठा लेते है लेकिन मन बाजारों में फिरता है। आप मन को भी बिठाएं अगर तन और मन स्थिर हो जाए तो सुरत वह शक्ति है जो सुनती है, निरत वह शक्ति है जो देखती है। जब हम नौं द्वारे खाली करके शब्द के दायरे में आ जाते हैं तो दसवें द्वार में जाकर निरत खुल जाती है और सुरत 'शब्द' को सुनती है। बेशक चुम्बक कितना भी अच्छा है जब तक लोहा उसके दायरे में नहीं आता चुम्बक लोहे को नहीं खींचता। जब तक हम सिमरन करके सुरत को तीसरे तिल पर नहीं ले आते शब्द सुनाई जरूर देता है लेकिन हमें खींचता नहीं।

मैं बताया करता हूँ कि आर्मी में जब बंदूक चलाना सिखाते हैं तो कहते हैं कि निशाना, बंदूक और तन एक ही सीध में स्थिर हों। जब हम अभ्यास में बैठते हैं तो यह तरीका हमें बड़ी मदद देता है। तन को स्थिर करके मन को सिमरन में एकाग्र करने से सुरत निरत अपने आप ही स्थिर हो जाती हैं। हमारा निशाना यह तीसरा तिल है यहाँ उस निशान को जोड़ दें। आप देखें! आपका ख्याल अपने आप निकलकर यहाँ आ जाएगा आप सही निशान पर पहुँच जाएंगे। आप भजन बोलते हैं:

कृपाल यही संदेशा देता, हवा यही सिखलाती है।
सिमरन करते चले चलो तो, मंजिल खुद मिल जाती है।

आपको मंजिल खुद मिल जाएगी किसी तरफ ढूंढने की जरूरत नहीं अगर ढूंढ़ेगे तो वहाँ पहुँच नहीं सकेंगे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस शब्द में कबीर साहब ने बड़े प्यार से कहा है कि जब तक गुरु नहीं मिलता हमारा भ्रम दूर नहीं होता। जब तक भ्रम दूर नहीं होता हम अंदर शब्द के साथ नहीं जुड़ सकते।

आखिरी समय में बेटे–बेटियां, धन– दौलत, हुक्म–हुकूमत हमें छुड़ा नहीं सकती। गुरु और 'नाम' के बिना हमें कौन छुड़वाएगा? परमात्मा ने हमें जीवन दिया है और भजन–सिमरन करके अपने जीवन को सफल बनाएं।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

24 फरवरी 1989

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सागर मंथन

वारां – भाई गुरदास जी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सभी सन्तों का एक ही तजुर्बा होता है, सभी सन्तों ने अपनी रचनाओं में एक सी चीजें लिखी हैं कि हम जो कर्म करते हैं उसका नतीजा हमें ही भुगतना है। परमात्मा का किसी के साथ द्वेष नहीं, परमात्मा प्रेम का सागर है। हम जो बीजते हैं हमे वही काटना है। हम जो कर्म इस जीवन में करते हैं वे हमारे प्रालब्ध कर्म बन जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमारे प्रालब्ध कर्मों के अनुसार ही हमें शरीर मिलता है। हर इंसान छः चीज़े अमीरी–गरीबी, सुख–दुःख, लाभ–हानि, तंदरूस्ती–बीमारी पहले से ही अपनी किस्मत में लिखवाकर लाता हैं समय आने पर घटनाएं घट जाती हैं।''

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''गुरु का मिलना भी हमारे भाग्य में पहले से ही लिखा होता है। क्या हमें इस जीवन में गुरु मिलेगा? क्या हमें गुरु पर भरोसा आएगा? क्या हम गुरु के कहे अनुसार चलेंगे? क्या हम इस जीवन में पूर्ण होंगे? या हमें बार–बार इस संसार में वापिस आना पड़ेगा? ये सभी चीज़ें हमारे भाग्य में लिखी होती हैं।'' आप कहते हैं:

जिन मसतकि धुरि लिखिया, तिना सतगुरु मिलया राम राजे।
अगिआन अंधेरा कटिया, गुरु ज्ञान घटि बलिया।
मसतकि भागु होवै धुनि लिखिया, ता सतगुरु सेवा लाए।
नानक रतन जवैहर पावै, धनु धनु गुरमत हरि पाए।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमारा सतसंग में आना भी पहले से ही निश्चित होता है। हमारा सतगुरु में तभी विश्वास होता है अगर यह हमारे भाग्य में लिखा है। जब तक हमारी आँखें बंद हैं हम तब तक ही

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यह कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं और भजन करते हैं लेकिन जब हमारी अंदर की आँख खुल जाती है तो हमें पता लगता है कि कोई ताकत हमें सतसंग में लाती है और भजन करवाती है।'' तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसीदासा खेल अचरज है पर मन नहीं बंधदा धीर।

मैं सतसंग शुरू करने से पहले आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ: सहारनपुर में एक साहूकार रहता था जो बहुत कंजूस था। उसके दो बेटे थे। उसने दोनों बेटों की शादी कर दी। साहूकार की पत्नी का देहान्त हो गया, उसे दुखों ने घेर लिया।

साहूकार की बहुऐं बहुत अच्छी थी। उन बहुओं ने अपने पतियों को सलाह दी कि आप अपने पिता को हरिद्वार ले जाएं यह वहाँ किसी महात्मा का सतसंग सुनेंगे तो इनकी विचारधारा बदल जाएगी। बेटों ने अपने पिता

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

को सलाह दी, ''हम आपको हरिद्वार ले चलते हैं। वहाँ महात्मा इकट्ठे होते हैं आपको सतसंग सुनवा लाते हैं।''

कंजूस साहूकार ने कहा, ''मैं जानता हूँ वहाँ के पंडित और महात्मा ठग हैं। गंगा का पानी वाईखोरा है; मैं वहाँ नहीं जाना चाहता।'' कुछ समय बाद साहूकार मर गया। बेटों ने सोचा! हमारा पिता जीते जी सतसंग में नहीं गया हम इसका दाह संस्कार गंगा पर ही करेंगे।

उन दिनों बसों–गाड़ियों के साधन नहीं थे उन्होंने अपने साथ कुछ रिश्तेदार लिए और मुर्दे को पालकी में उठाकर हरिद्वार की तरफ चल पड़े। उन्होंने रास्ते में एक रात सराय में बिताई। सब लोग बाहर सो गए और पालकी को अंदर रख दिया। वहाँ एक कोढ़ी रहता था, उस कोढ़ी ने मुर्दा उठाकर एक तरफ रख दिया और खुद उस पालकी में सो गया कि मैं हरिद्वार पहुँच जाऊंगा, यहाँ पर तो भूखा मरता हूँ। वहाँ आने वाले लोग दान–पुण्य करते हैं जिससे मेरा गुजारा चल जाएगा।

सुबह होते ही किसी ने कुछ नहीं देखा पालकी उठाई और चल दिए। हरिद्वार पहुँचकर जब पंडितों को संस्कार के लिए मुर्दा दिखाया तो मुर्दे के अंग हिलते हुए देखकर उन्हें खुशी हुई कि मुर्दा जिन्दा हो गया है। जब देखा तो पता लगा कि पालकी में मुर्दे की जगह एक कोढ़ी था। उस कोढ़ी ने बताया कि मैं वहाँ भूखा मरता था यहाँ कुछ खाना मिल जाएगा; आपका मुर्दा सराय में ही पड़ा है।

कुछ आदमी हरिद्वार में ही रहे और कुछ वापिस उस सराय में पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुर्दे को घोड़ी पर बाँध दिया। घोड़ी डरी और भागकर वापिस सहारनपुर आ गई। वहाँ के लोगों ने कहा इसके बेटे इसे हरिद्वार ले गए थे लेकिन यह यहीं वापिस आ गया है। आखिर उस साहूकार का संस्कार सहारनपुर में ही किया गया।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हिन्दुस्तान के लोग गंगा में हड्डियां प्रवाह करते हैं। उस जमाने में पंडित ही हड्डियाँ लेकर हरिद्वार जाया करते थे। कंजूस साहूकार के परिवार ने पंडित को रूपये–पैसे, थोड़ा सा सोना–चाँदी और कपड़े में हड्डियाँ बाँधकर गंगा में प्रवाह करने के लिए दी। पंडित ने सोचा कि रास्ते में चोर मिल गए तो सारा सामान लुट जाएगा।

पंडित ने हड्डियों को कपड़े में डालकर पेड़ के साथ बाँध दिया। रूपये–पैसे और सोना–चाँदी अपने घर रखने चला गया। इतनी देर में एक लक्कड़हारा उस पेड़ पर चढ़ा; लक्कड़हारे ने हड्डियों को वहाँ फैंक दिया और कपड़ा लेकर अपने घर चला गया। जब पंडित वापिस आया तो वहाँ कुछ भी न देखकर हैरान हुआ। उस पंडित ने हरिद्वार वाले पंडित से ऐसे ही चिट्ठी लिखवा दी कि अमुक पंडित आया था और हमने फूल बहा दिए हैं।

कुछ दिनों बाद लक्कड़हारे की पत्नी ने उस कपड़े की कमीज सिलवाकर पहन ली। साहूकार की बहू ने वह कपड़ा पहचान लिया और लक्कड़हारे को बुलवाकर पूछा कि तुझे यह कपड़ा कहाँ से मिला? जब लक्कड़हारे को धमकाया गया तो उसने सारी बात बता दी कि आपके पिता की हड्डियाँ पेड़ पर इस कपड़े में बंधी हुई थी। मैंने हड्डियाँ वहीं फेंक दी और कपड़ा अपने घर ले गया।

पंडित को बुलवाकर पूछा गया कि तुमने हमें हरिद्वार से झूठी चिट्ठी भिजवाई कि हमारे पिताजी की हड्डियाँ गंगा में प्रवाहित हो गई हैं। पंडित ने कहा, ''देखो जी! जब आपका पिता इतने लोगों के साथ हरिद्वार नहीं गया तो मैं अकेला उसे कैसे ले जा सकता था?'' इसलिए जब परमात्मा की मौज हो तो ही इंसान परमात्मा की भक्ति कर सकता है।

एक बार सन् 1581 में गुरु रामदास जी को अपने एक नज़दीकी रिश्तेदार सहारीमल के बेटे की शादी में लाहौर जाने का निमंत्रण मिला।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उस समय गुरु रामदास जी के पास फुर्सत नहीं थी इसलिए आपने अपने किसी पुत्र को विवाह में भेजने का वायदा कर लिया।

रामदास जी ने अपने बड़े बेटे पृथ्वीचन्द को बुलाकर कहा कि वह शादी में जाए और पन्द्रह दिन वहीं रहकर संगत की सेवा करे। पृथ्वीचन्द ने कहा, ''अगर मैं पन्द्रह दिन के लिए शादी में जाऊंगा तो यहाँ सतसंग का इंतजाम कौन करेगा?'' वह मुखिया था इसलिए समझता था कि सतसंग उसके इंतजाम से ही चल रहा है। वह नहीं चाहता था कि कोई अन्य आदमी यह काम करे। दूसरे बेटे महादेव को नामखुमारी का नशा चढ़ा रहता था, वह दुनियावी कामों को नफरत से देखता था। उस समय गुरु रामदास जी के पास अपने छोटे बेटे अर्जुनदेव को लाहौर शादी में भेजने के सिवाय और कोई चारा नहीं था।

सहारीमल ने कहा, ''अर्जुन बहुत छोटा है हो सकता है कि वह लाहौर पहुँचते ही घर वापिस आने के लिए कहे इसलिए इसे ले जाना ठीक नहीं होगा।'' गुरु रामदास ने कहा तुम चिन्ता मत करो मैं उसका ध्यान रखूंगा। गुरु रामदास ने अर्जुन को आज्ञा दी कि वह अपने चाचा के साथ शादी में लाहौर जाए और जब तक मैं हुक्म न दूं वापिस नहीं आए।''

इस तरह अर्जुन अपने चाचा के साथ लाहौर गए। शादी समाप्त हो गई आप वहीं रहे और आप अपने पिता के हुक्म का इंतजार करने लगे। जब बहुत दिन बीत गए लेकिन अर्जुन को कोई संदेश नहीं मिला तो विरह में आपके प्राण सूखने लगे। आपने सतगुरु को याद दिलाने के लिए यह कविता लिखकर भेजी:

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताईं, बिलप करे चात्रिक की न्याईं।
त्रिखा न उतरै सांत न आवै, बिन दरसन संत प्यारे जीओ।

जब संदेशवाहक यह पत्र लेकर पहुँचा उस समय गुरु रामदास जी आराम फरमा रहे थे। पृथ्वी ने संदेशवाहक से कहा कि यह पत्र मैं रामदास

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जी को दे दूँगा लेकिन उसने वह पत्र अपने कोट की जेब में रख लिया। इसी तरह समय बीतता गया और अर्जुनदेव को कोई संदेश नहीं मिला। विरह की अग्नि और तेज हो गई आपने एक और कविता लिखकर भेजी:

तेरा मुख सुहावा जीओ सहज धुन बाणी।
चिर होआ देखे सारंग पाणी।

पृथ्वी ने यह पत्र भी गुरु रामदास जी को नहीं दिया और अपने पास रख लिया फिर अर्जुनदेव ने तीसरी कविता लिखकर उस पर अंक तीन लिखकर भेजा:

इक घड़ी न मिलते ता कलयुग होता।
हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुध भगवंता।

इस बार अर्जुनदेव ने संदेशवाहक से कहा कि यह पत्र गुरु रामदास जी के हाथ में ही देकर आए। जब गुरु रामदास जी ने यह पत्र पढ़ा तो हुक्म दिया कि पहले के पत्र भी खोजो। पृथ्वीचन्द ने कसम खाकर कहा कि उसे पिछले पत्रों के बारे में कुछ मालूम नहीं। रामदास जी ने पृथ्वीचन्द की तलाशी का हुक्म दिया। पृथ्वीचन्द के कोट की जेब में से पहले के दोनों पत्र मिले। तब तक अर्जुनदेव को वापिस आने का फरमान मिल चुका था।

रामदास जी ने कहा कि जो आगे की कविता पूरी करेगा वही आत्मिक ज्ञान का उत्तराधिकारी होगा। अर्जुन ने आगे की कविता इस तरह पूरी की:

भाग होआ गुर संत मिलाया, प्रभ अबिनासी घर मह् पाया।
सेव करी पल चसा न विछुड़ां, जन नानक दास तुमारे जीओ।

अर्जुन का प्यार और भक्ति देखकर गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव को गले लगा लिया और उन्हें अपना उत्तराधिकारी बनाया। उस समय भाई गुरदास जी वहाँ मौजूद थे और वह जानते थे कि अर्जुनदेव पूर्ण पुरुष हैं। भाई गुरदास सदा गुरु अर्जुनदेव के पास रहे और उन्हें जो कार्य दिया गया

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

आपने उसे प्रेम पूर्वक किया। जब पृथ्वीचन्द को पता चला कि गुरु रामदास जी अर्जुनदेव को उत्तराधिकारी बना रहे हैं तो पृथ्वीचन्द ने गुरु रामदास जी से झगड़ा करना शुरू कर दिया।

गुरु रामदास जी ने पृथ्वीचन्द को बड़े प्यार से समझाया, ''बेटा! तुम्हें मेरे साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए मैं तुम्हारा पिता हूँ। इस बात का फैसला मैं नहीं कर रहा, यह परमात्मा का काम है। इसका फैसला परमपिता परमात्मा ही कर सकता है कि उसका काम कौन करेगा? मेरा इस बात से कोई लेना–देना नहीं है। मैं किसी को इस काम के लिए नियुक्त नहीं कर सकता। परमात्मा खुद देखता है कौन इस लायक है लेकिन पृथ्वीचन्द ने गुरु रामदास की बात को नहीं सुना।

जब तूफान आता है बड़े–बड़े मजबूत पेड़ भी उखड़ जाते हैं। उसी तरह जब पूर्ण सतगुरु चोला छोड़ता है तो प्रेमी आत्माओं के लिए वह समय बहुत कठिन होता है। गुरु के चोला छोड़ने पर लोग पार्टियों में बँट जाते हैं। सभी लोग अपने आपको असली और सच्चा बताते हैं, दूसरे लोगों की निन्दा करते हैं।

जब गुरु अर्जुनदेव जी गुरु ग्रन्थ साहब की रचना कर रहे थे तो भाई गुरदास को इसका लेखन रूप देने का सम्मान दिया गया। गुरु अर्जुनदेव ने कहा, ''गुरु ग्रन्थ साहब रूहानियत का खज़ाना है और भाई गुरदास की वारें(रचनाएं) इस खज़ाने को खोलने की कुंजी हैं। जो गुरु ग्रन्थ साहब की शिक्षाओं को समझना चाहते हैं उनके लिए भाई गुरदास की वारों को पढ़ना व समझना जरूरी है।''

महाराज सावन सिंह जी अक्सर भाई गुरदास की वारों पर सतसंग करते हुए कहा करते थे, ''भाई गुरदास सिक्ख धर्म के वेद व्यास थे।''

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भाई गुरदास जी की एक वार आपके आगे रखी जा रही है। भाई गुरदास जी गुरु अमरदास जी के भाई के बेटे थे। भाई गुरदास जी गुरु अर्जुनदेव जी के मामा थे। आपने कई सिक्ख गुरुओं का समय देखा, जब भी किसी गुरु ने चोला छोड़ा आप वहाँ उपस्थित रहे। भाई गुरुदास जी गुरुओं के परम भक्त थे।

भाई गुरदास की वारां पउड़ी - 1

सागरु अगमु अथाहु मथि चउदह रतन अमोल कढाए।
ससीअरु सारंग धणखु मदु कउसतक लछ धनंतर पाए।
आरंभा कामधेणु लै पारिजातु अस्व अमिउ पीआए।
ऐरापति गज संखु बिखु देव दानव मिलि वंडि दिवाए।
माणक मोती हीरिआँ बहु मुले सभु को वरुसाए।
संखु समुंद्रहुँ सखणा धाहां दे दे रोइ सुणाए।
साधसंगति गुर सबदु सुणि गुर उपदेसु न रिदै वसाए।
निहफलु अहिला जनमु गवाए।। 1 ।।

भाई गुरदास हमें प्यार से समझाते हैं कि यह एक मशहूर कहानी है जो वेदों–शास्त्रों में लिखी हुई है कि देवताओं और राक्षसों ने सागर का मंथन किया; **सागर मंथन** से चौदह रत्न निकले। वहाँ परमात्मा स्वयं आकर्षक रूप में प्रकट हुआ और उन चौदह रत्नों को देवताओं और राक्षसों में बाँट दिया। देवता वे कहलाते हैं जिनमें इंसान की तरह विवेक की क्षमता होती है। राक्षस वे कहलाते हैं जिनमें विवेक की क्षमता नहीं होती।

जब सागर से रत्न बाहर लाए गए तो परमात्मा ने देवताओं और राक्षसों में ये रत्न बाँट दिए। देवताओं ने अमृत चुना और राक्षसों ने शराब चुनी। दूसरी और भी चीज़ें थी जिनकी सूची इस तरह है:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

1 चन्द्रमा 2 दिव्य धनुष 3 शराब 4 अलौकिक हीरा 5 लक्ष्मी धन की देवी 6 धन्वंतरी देव चिकित्सक 7 रम्भा इन्द्रलोक की परी 8 कामधेनु इच्छा पूर्ण करने वाली गाय 9 पारिजात वृक्ष जिसके नीचे बैठने से संपूर्ण इच्छाएं पूर्ण होती हैं 10 दिव्य घोड़ा 11 अमृत 12 ऐरावत दिव्य शक्तिशाली हाथी 13 शंख और14 विष

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''शंख भी उन चौदह रत्नों में से एक है जो **सागर मंथन** से निकला। शंख की हालत देखें! यह अंदर से खोखला होता है फिर भी इसे सुबह लोगों को उठाने के लिए जोर से चिल्लाना पड़ता है।''

कबीर साहब भी लिखते हैं, ''शंख भी **सागर मंथन** से लाया गया लेकिन यह अंदर से खोखला होता है हर सुबह लोगों को उठाने के लिए चीखता है जबकि यह भी सागर से निकली अनमोल वस्तुओं में से एक है फिर भी इसकी कोई कीमत नहीं है।''

भाई गुरदास किसी की निन्दा नहीं कर रहे आप शंख की तुलना मनमुख लोगों से कर रहे हैं जो मन का कहना मानते हैं। मनमुख गुरुओं के पास जाकर भी अपना समय बर्बाद करते हैं क्योंकि वे गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करते वे शंख की तरह अंदर से खोखले रहते हैं। मनमुख गुरु के पास जाकर भक्ति नहीं करते, चौरासी लाख योनियों में जाकर जन्म–मरण के चक्कर में पड़ते हैं; उनकी हालत शंख जैसी होती है।

मनमुख गुरु के पास आते हैं सतसंग भी सुनते हैं लेकिन उन पर सतसंग का असर नहीं होता। उनकी हालत पानी में पड़े पत्थर की तरह होती है; पत्थर पानी में रहता है लेकिन उसमें पानी की एक बूंद भी जज्ब नहीं होती क्योंकि मनमुखों के अंदर गंदगी होती है वे कोई भी चीज़ अपने अंदर धारण नहीं करते; उनकी हालत उस शंख जैसी होती है।

जीवित गुरु का सतसंग ही सागर है। जिस तरह **सागर मंथन** से चौदह अनमोल चीजें निकली उसी तरह जीवित गुरु के सतसंग से हम धैर्य,

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विवेक, संतोष, पवित्रता, अभ्यास, भजन और सिमरन का अनमोल धन प्राप्त करते हैं।

जब गुरु रामदास जी ने चोला छोड़ा उस समय भाई गुरदास ने ऐसा ही समय देखा। वह बड़ी ही दर्दनाक घड़ी थी। पृथ्वीचन्द बहुत ही प्रभावशाली व्यक्ति था। उसने अर्जुनदेव को गुरु स्वीकार नहीं किया। सब कुछ पृथ्वीचन्द के हाथ में था। पृथ्वीचन्द ने सारी सम्पत्ति अपने कब्जे में ले ली, वह लोगों को प्रभावित करने लगा। जो गरीब लोग गुरु अर्जुनदेव के पास जाते थे उन्हें पृथ्वीचन्द परेशान करता और कहता, ''अच्छा! मैं देखूंगा तुम लोग कैसे उसके पास जाते हो तुम्हारा गुरु कैसे काम जारी रख सकेगा?'' भाई गुरदास को पृथ्वीचन्द का यह व्यवहार पसंद नहीं था।

भाई गुरदास जी पृथ्वीचन्द, अर्जुनदेव और महादेव के मामा लगते थे, उनके लिए तीनों भाई एक समान थे। भाई गुरदास ने पृथ्वीचन्द को समझाने की कोशिश की कि वह अच्छा काम नहीं कर रहा। भाई गुरदास ने पृथ्वीचन्द से कहा, ''देखो बेटे! यह परमात्मा की दात है, जिस पर गुरु रामदास जी खुश थे उन्होंने यह दात उसे दे दी। तुम्हें रामदास जी की इच्छा का सम्मान करना चाहिए, अपने भाई के साथ लड़ना नहीं चाहिए।''

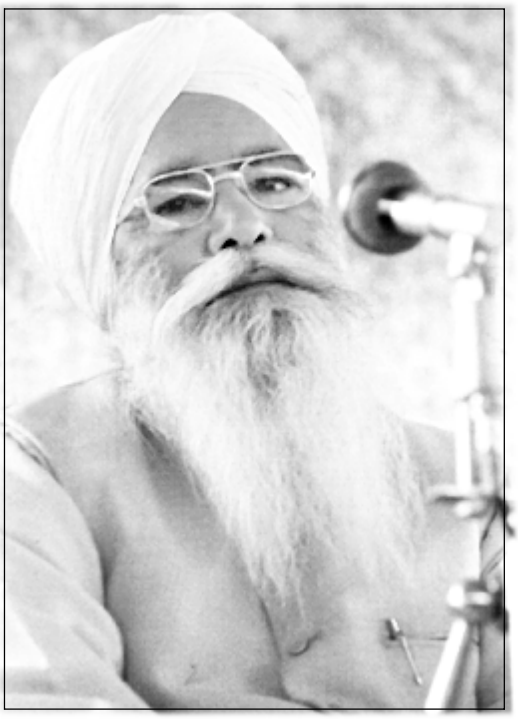

फिर भी पृथ्वीचन्द कठोर बना रहा उसमें कोई परिवर्तन

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नहीं आया। जब भाई गुरदास ने पृथ्वीचन्द की यह हालत देखी कि जो गुरु रामदास जी के इतने नज़दीक रहता था जिसने उनकी बहुत सेवा की थी उस पर गुरु रामदास जी का कोई रंग नहीं चढ़ा था, कोई दीनता नहीं थी। ऐसी दशा देखकर भाई गुरदास को रचना लिखने की प्रेरणा मिली। तब भाई गुरदास ने *वारों* की रचना करने की बात सोची ताकि आप पृथ्वीचन्द व अन्य लोगों को समझा सकें कि जो लोग भजन–अभ्यास नहीं करते अहंकार में रहते हैं, उनके साथ क्या होता है?

पउड़ी - 2

निरमलु नीरु सुहावणा सुभर सरवरि कवल फुलंदे।
रूप अनूप सरूप अति गंध सुगंध होइ महकंदे।
भवराँ वासा वंझ वणि खोजहि एको खोजि लहंदे।
लोभ लुभति मकरंद रसि दूरि दिसंतरि आइ मिलंदे।
सूरजु गगनि उदोत होइ सरवर कवल धिहानु धरंदे।
डड्डू चिकड़ि वासु है कवल सिआणि न माणि सकंदे।
साधसंगति गुर सबदु सुणि गुर उपदेस न रहत रहंदे।
मसतकि भाग जिन्हां दे मंदे।। 2 ।।

तालाब के एक हिस्से में मेंढ़क रहता है, तालाब के दूसरे हिस्से में कमल खिलता है। कमल सुगन्धित है भंवरे कमल की संगत का आनन्द उठाने के लिए आ जाते हैं जबकि मेंढ़क भी वहीं रहता है जहाँ पर कमल है लेकिन वह कमल की संगत का लाभ नहीं उठाना चाहता। इसी तरह जो अंदर से मलीन हैं वे गुरु के पास आते हैं गुरु का सतसंग भी सुनते हैं फिर भी गुरु के शुभ वचनों को हृदय में धारण नहीं करते, सतगुरु के कहे अनुसार नहीं चलते। इसी तरह प्रेमी आत्माएं दूर–दूर से आकर गुरु के चरणों में बैठती हैं। वे गुरु को परमात्मा समझती हैं उसे चेतन पुरुष

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समझकर भक्ति करती हैं जबकि वे सारा समय वहाँ नहीं रहती फिर भी जितना समय मिलता है वे गुरु से फायदा उठाती हैं।

जब सूरज उदय होता है, तो कमल खिलता है लेकिन मेंढ़क के लिए सूरज उदय हो या न हो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता वह कीचड़ के तालाब में समाया रहता है। उसी तरह मनमुख किसी बात की चिन्ता नहीं करते क्योंकि वे इस संसार में सांसारिक मान–बड़ाई और धन की इच्छा से आते हैं। उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि समय बीता जा रहा है या नहीं।

भाई गुरदास ने भंवरे का उदाहरण गुरमुख के रूप में दिया है क्योंकि गुरमुख गुरु के पास आता है उसे गुरु जो कुछ करने के लिए कहता है वह करता है। हमें गुरमुख बनने की कोशिश करनी चाहिए।

आप सभी लोग जानते हैं कि जब महाराज कृपाल ने चोला छोड़ा वह बहुत मुश्किल का समय था। उस समय जो कुछ हुआ उसका मुझ पर गहरा असर पड़ा। तेरह साल पहले इसी दिन 24 फरवरी 1976 को रसल परकिन्स पहली बार मुझसे मिलने आया था। आज 24 फरवरी 1989 से मैंने भाई गुरदास की रचनाओं पर सतसंग देना शुरू किया है।

गुरु रामदास के चोला छोड़ने के बाद भाई गुरदास पर गहरा असर पड़ा था। मैं भाई गुरदास की रचनाओं पर सतसंग देने के लिए प्रेरित हुआ हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भाई गुरदास की वारों पर दिए गए सतसंगों पर भी पुस्तक छपेगी। यह एक बहुत जरूरी विषय है जो प्रेमियों के लिए फायदेमंद है।

रसल ने सुखमनी साहब[1], गौड़ी वारां पर पुस्तकें छापकर बहुत ही शानदार काम किया। अब यह आसा दी वार[2] पर कड़ी मेहनत कर रहा है।

मेरे पास आने से पहले रसल परकिन्स बहुत से प्रेमियों के पास गया था जिन्होंने इसका बहुत स्वागत किया। जब यह मेरे पास आया तब मैं

1. *सुखमनी साहब – खुशियों का खजाना*
2. *आसा दी वार – परमात्मा के रंग*

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सागर मंथन

महाराज कृपाल के चोला छोड़ने के बाद बहुत गहरे सदमें में था। मैंने इसका स्वागत करने की बजाय इसे डाँटा। रसल तो महाराज कृपाल के प्यार में डूबा हुआ था। यह एक भंवरे की तरह मुझसे मिलने के लिए आया था इसलिए इसने सतगुरु के प्यार में उस डाँट को स्वीकार किया। यह सब उसके भाणें में था लेकिन मुझे अब भी याद है कि मैंने उस समय जो व्यवहार इसके साथ किया था।

उस समय मैंने अपने आपको एक कमरे में बंद किया हुआ था। मैं दिन में एक बार एक घंटे के लिए लोगों से मिलने बाहर आता था। महाराज जी के जाने के बाद जो कुछ हो रहा था मैं वह सब देख रहा था। मैंने सोचा कि मैं बाहर ही नहीं आऊँगा किसी को अपना चेहरा नहीं दिखाऊंगा। यह रसल परकिन्स का प्यार ही था जो मुझे संसार में बाहर ले आया और मुझसे प्रेमियों की सेवा करवाई।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

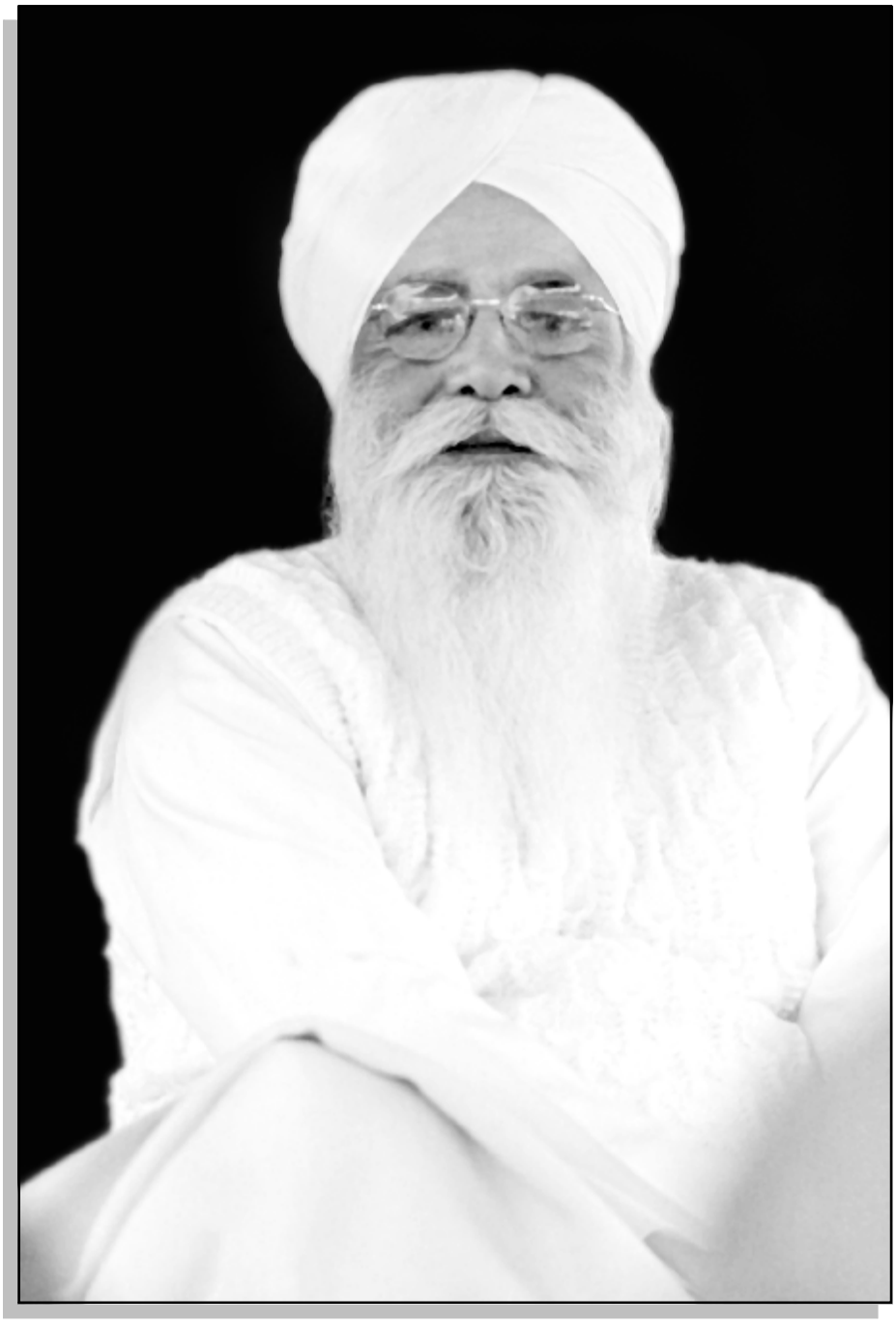

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : *अगर कोई हमारी टेबल पर बैठकर मीट खा रहा हो तो क्या हम उसके कर्म अपने ऊपर लेते हैं?*

बाबा जी : सन्तबानी मासिक पत्रिका को छपते हुए काफी साल हो गए हैं। हर सतसंगी को अपने सवाल का जवाब मासिक पत्रिका में से पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। सतसंगी को अपने खाने–पीने के बारे में खास तवज्जो रखनी चाहिए। जितना हमारा अन्न पवित्र होगा उतने ही हमारे ख्याल पवित्र होंगे और उतना ही हमारा मन पवित्र होगा; पवित्र मन का हमारी आत्मा पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा।

एक प्रेमी : *मैं जितना ज्यादा आपके नज़दीक आती हूँ, सिमरन करने की कोशिश करती हूँ मेरे मन में उतनी ही ज्यादा ख्वाहिशें उठती हैं। इन ख्वाहिशों को रोकने के लिए क्या करूँ?*

बाबा जी : मैंने कल भी सतसंग में इस बारे में बताया था कि जब हम भजन–सिमरन नहीं करते तो हमारा मन हमें गुमराह करता है हमारे अंदर दुनियां की ख्वाहिशें पैदा करता है क्योंकि अभ्यास में मन को कैद होना पड़ता है। यह मन कैद से डरता हुआ हमारी आत्मा को सदा ही गुमराह करता रहता है। यह अपने मालिक का काम बखूबी करता है तो हमें भी अपने मालिक का काम करना चाहिए।

जिस परमात्मा ने हमें संसार में भेजा है उसे हमारा ज्यादा फिक्र है अगर हम यह कहें कि हम अपनी परवरिश खुद कर रहे हैं तो यह हमारी

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भूल है अज्ञानता है। हम तब तक ही यह कहते हैं जब तक हमारी आँखें बंद हैं, हम चढ़ाई नहीं करते। जिन सन्तों की चढ़ाई है वे कहते हैं कि हमारी परवरिश करने वाली कोई और ताकत है।

महाराज सावन सिंह जी कहते हैं, ''दुख–सुख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरुस्ती ये सब चीज़ें हमें हमारे कर्मों के मुताबिक मिलती है। हम यह सब लिखवाकर लाते हैं। हमारे शरीर की रचना होने से पहले प्रालब्ध बनती है।'' तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसी दासा यह खेल अचरज है मन नहीं बंधदा धीर।

हमें अपनी ख्वाहिशों को 'नाम' की तरफ, गुरु की तरफ लगाना चाहिए। यही सबसे अच्छा तरीका है कि जब मन ख्वाहिशें पैदा करे उन ख्वाहिशों को गुरु को अर्पण कर दें।

महाराज सावन कहा करते थे, ''जितनी ज्यादा ख्वाहिशें होती हैं आदमी उतना ही ज्यादा गुमराह होता है।'' हमारी ख्वाहिशें कभी पूरी नहीं होती अगर परमात्मा एक लाख दे दे तो दो लाख की ख्वाहिश पैदा हो जाती है अगर एक करोड़ दे दे तो दो करोड़ की ख्वाहिश पैदा हो जाती है। यह ख्वाहिशें आगे–आगे चलती जाती हैं। मन को ख्वाहिशें पैदा करके आसान तरीका मिल जाता है उसे न कुछ लेना पड़ता है न कुछ देना पड़ता है।

हमें ख्वाहिशों वाला समय सतगुरु की भक्ति में लगाना चाहिए। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि हम हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाए। ख्वाहिश और मेहनत में बहुत फर्क है। ख्वाहिशें हमेशा हमारे अंदर आलस पैदा करती हैं। मेहनती आदमी कामयाब हो जाता है। ख्वाहिशें पैदा करने वाला कामयाब नहीं होता।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक बार मुहम्मद साहब अपने सेवकों को सतसंग सुना रहे थे। वह इसी विषय पर बोल रहे थे कि सब कुछ अल्लाहताला के हाथ में है वह जो चाहे करे वह करनयोग है। उनका एक आलसी सेवक था। वह ऊँटों की सेवा करता था। उसके दिल में यह ख्याल आया अगर सब कुछ अल्लाहताला करता है तो मैं रोज ऊँटों की टाँगों को बांधता हूँ मुझे मेहनत करनी पड़ती है। मुझे मुहम्मद साहब से आज्ञा लेनी चाहिए कि जब सब कुछ अल्लाहताला ही करता है तो ऊँटों को बाँधने की, सेवा करने की क्या जरूरत है? मुहम्मद साहब ने कहा:

उद्यम करेन्दया आवे हार ते जाणिऐ भाणा करतार।

आपने उस सेवक से कहा, ''ऊँटो की सेवा करना इन्हें बाँधना तेरा फर्ज है अगर फिर भी इन्हें कोई ले जाता है तो यही समझो कि अल्लाहताला की यही मर्जी थी; नाराज़ न हो और अल्लाहताला की भक्ति कर।''

बाबा बिशनदास के पास उनके गाँव का एक आदमी आया। उस समय मैं भी वहीं बैठा था। उस आदमी ने कहा, ''बाबाजी! अंदर ख्वाहिशें बहुत उठती हैं। मन सारा दिन बैठा–बैठा ख्वाहिशें उठाता रहता है, अभी एक ख्वाहिश पूरी नहीं होती दूसरी दूसरी ख्वाहिश उठा लेता है।'' बाबा बिशनदास ने कहा, ''ख्वाहिशें उठाने वाला मन लपोट शंख जैसा होता है।'' मैंने अपनी ज़िन्दगी में लपोट शंख के बारे में बहुत कुछ सुना था। मैंने बाबाजी से कहा कि आप इसके बारे में कुछ बताएं?

बाबा बिशनदास ने कहा, ''किसी प्रेमी ने परमात्मा की भक्ति की परमात्मा ने खुश होकर उसे एक शंख दे दिया और उससे कहा कि जब भी तुझे किसी चीज़ की जरूरत हो तू इस शंख को बजा देना तुझे अन्न–पानी, पैसा–टका सब कुछ ही मिल जाएगा।'' वह आदमी शंख लेकर एक गाँव में चला गया। वहाँ जाकर उसने एक जाट से कहा कि मैंने रात काटनी है। जाट ने कहा, ''आ जाओ। घरवालों ने उसे बिस्तर वगैरह दिया और कहा

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कि महात्मा जी! अभी आपके लिए खाना तैयार कर देते हैं। उसने कहा, ''नहीं मेरे पास एक ऐसा साधन है जिससे मुझे बना बनाया खाना मिल जाता है।'' घरवाले सोचने लगे कि आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि बना बनाया खाना मिल जाए। उस आदमी ने स्नान वगैरह किया, भजन–अभ्यास करके अपना शंख बजाया तो बना बनाया खाना आ गया, उसने खाना खा लिया।

वह आदमी शंख से जो कुछ भी माँगता उसे वह मिल जाता। घर के लोगों ने सोचा! इसका शंख चुरा लेते हैं। वह आदमी जब जरा इधर–उधर हुआ तो उन्होंने उसका शंख चुरा लिया। सुबह उस आदमी ने घर के लोगों से पूछा, ''यहाँ मेरा शंख रखा था?'' घर के लोगों ने कहा, ''महात्मा जी! आप चाहे हमसे कसम ले लें हमने आपका शंख नहीं देखा।'' वह जानता था कि शंख तो इन्होंने ही उठाया है; वह उदास होकर घर से चल पड़ा फिर जाकर भगवान की भक्ति करने लगा।

भगवान ने कहा, ''मैंने तुझे पहले भी बहुत कुछ दिया है, तुझे जो शंख दिया था वह कहाँ है?'' उसने बताया कि उस घर के लोगों ने मेरा शंख चुरा लिया है। भगवान ने कहा, ''मैं तुझे एक और शंख देता हूँ, यह शंख न कुछ देगा न कुछ लेगा केवल बोलेगा।'' वह उस शंख को लेकर उसी घर में चला गया। घर के लोगों ने उसकी बड़ी सेवा की उसे बहुत प्यार दिखाया कि शायद अब इसके पास कोई और अच्छी चीज़ होगी।

घर के लोगों ने कहा, ''महात्मा जी! आपको जिस चीज़ की जरूरत हो हमें बताएं।'' उसने कहा, ''मेरे पास शंख है यह सब चीज़ें देता है।'' जब उसने शंख बजाकर कहा कि सौ रूपए चाहिए तो शंख बोल उठा, ''उठा दो सौ रूपये।'' फिर उसने शंख बजाकर कहा कि दो सौ रूपये की जरूरत है तो शंख बोल उठा, ''ले चार सौ रूपये।'' मतलब यह कि दोगुना मिलने की आवाज आ रही थी लेकिन लेना–देना कुछ भी नहीं था। घर के लोगों ने सोचा कि पहले वाला शंख तो अन्न–पानी ही देता था यह शंख तो

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पैसे भी देता है। उन्होंने महात्मा को बातों में लगाकर वह शंख उठा लिया और पहले वाला शंख उसकी जगह पर रख दिया। इस तरह वह आदमी अपना पहले वाला शंख उठाकर उस घर से चल पड़ा।

घर के लोगों ने सोचा अब जल्दी से माया बनाई जाए क्योंकि जितना माँगें यह शंख उससे दोगुना देता है उन्होंने शंख बजाकर कहा कि एक हजार रूपये दे। शंख ने कहा, ''उठाओ दो हजार।'' उन्होंने कहा, ''दो हजार दे।'' शंख ने कहा, ''उठाओ चार हजार।'' आखिर बहुत समय तक ऐसे ही बातचीत चलती रही। घर के लोगों ने शंख से कहा, ''तू देता तो कुछ नहीं केवल बोलता ही जा रहा है।'' शंख ने कहा कि मैं लपोट शंख हूँ, मैं लेता–देता कुछ नहीं।

यही हालत हमारी ख्वाहिशों की है, हम बैठे–बैठे ख्वाहिशें उठाते हैं। हम बेकार में समय बर्बाद करते हैं इससे अच्छा है हम मेहनत करें, गुरु से प्यार करें और गुरु पर भरोसा करें। गुरु को हमारी जरूरतों का ज्ञान है। वह हमारे अंदर बैठा है हमारी जरूरत पूरी करेगा; वह बेइन्साफ नहीं।

जब परम पिता कृपाल से मेरा मिलाप हुआ मैंने आपके आगे यही विनती की, ''मेरा दिल दिमाग खाली है मुझे यह नहीं मालूम कि मैं आपसे क्या कहूँ, क्या माँगू?'' हजूर ने खुश होकर कहा कि मैं दिल दिमाग खाली देखकर ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर आया हूँ। मेरे पास भरे दिमाग वाले बहुत हैं। ऐसा नहीं कि मेरा दिल दिमाग खाली होने से मैंने कुछ नहीं किया। जो कुछ मेरे गुरुदेव ने मुझसे कहा मैंने उनके हुक्म की पालना की। मैंने उनके हुक्म को मानना ही अपनी जिंदगी का अंग समझा।

हम जिसकी याद में बैठे हैं वह हमें पुरुषार्थ करने का जोश देता है, हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं सिखाता और इसके साथ–साथ वह हमारा फिक्र भी करता है। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

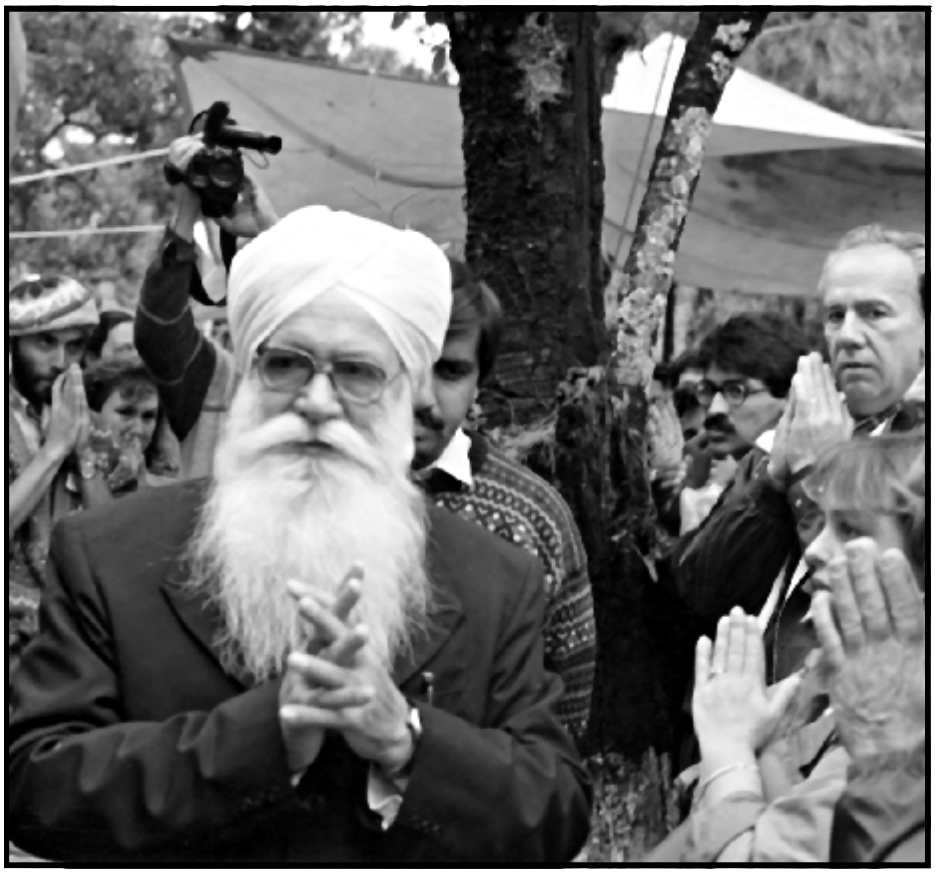

वेड़े सज्जण दे जाएके, सानूं कीता सहूल।
ओह प्रभ साडा सखी है, असी सेवा कनियो सूम।

सूम उसे कहते हैं जिसके पास बहुत धन पदार्थ हो लेकिन वह न खुद खाए न किसी को खिलाए और न ही दान करे, उस माया को बैंकों में ही छोड़कर सांसारिक यात्रा पूरी करके चला जाए। चाहे उसकी चमड़ी चली जाए लेकिन वह किसी को दमड़ी देने के लिए तैयार नहीं होता। हमारी भी ऐसी ही हालत है हम दुनियां की ख्वाहिशें, दुनियां के काम दिन–रात करते हैं लेकिन हमारा सूमपना तो भजन–सिमरन का है। हम सोचते हैं अगर हमारा भजन–सिमरन ज्यादा हो गया तो हमारे ऊपर बोझ न हो जाए!

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हर धन के भर लेहो भण्डार, नानक गुरु पूरे नमस्कार।

हम रोज़ जो भजन–अभ्यास करते हैं यह एक प्रकार का भण्डार जमा कर रहे हैं इसे हमारा गुरुदेव हमारे लिए संभालकर रखता है, उसने यह संभाला हुआ धन हमें ही देना है बल्कि उसने अपना धन भी हमें ही देना है।

कबीर साहब बहुत गरीब घर में पैदा हुए, ताना बुनकर अपना गुजारा किया करते थे। उस समय ताना बुनने की कोई खास मजदूरी नहीं मिलती थी। उन्होंने भरोसा और विश्वास रखकर भक्ति की।

एक बार काशी के पंडितों ने पत्र भेज दिए कि कबीर के घर में यज्ञ है। दूर–दूर से लोग खाने पर आ गए। दुनियादार लोग हमेशा ही सच्चाई का विरोध करते हैं। कबीर के घर में अन्न–पानी का इंतज़ाम नहीं था। आपकी सेवादार लोई घबराई। कबीर साहब ने लोई से कहा, ''तू क्यों डरती है; यह संगत परमात्मा सतनाम की है, हम भी उसी के हैं।''

कबीर साहब अंदर जाकर अभ्यास पर बैठ गए। आपने बड़े भरोसे से कहा, ''हे परमात्मा! रहती है तो तेरी है अगर जाती है तो भी तेरी है; इसमें मेरा क्या है?'' इतिहास में आता है कि लोग शाम तक खाना खाते रहे लेकिन खाना खत्म नहीं हुआ। सब लोग हैरान हो गए। जिन्होंने पत्र लिखे थे वे भी कहने लगे कि अब तो कबीर की महिमा पहले से भी ज्यादा हो गई। लोग धन्य कबीर! धन्य कबीर! कहकर चले गए। कबीर साहब अहंकार में नहीं आए। आपने कहा:

न हम किया न करेगें न कर सके शरीर।
क्या जाने सब हर किया भयो कबीर कबीर।

अगर हमारा भरोसा हो तो सतगुरु हमारी मदद जरूर करता है। सतनाम कहने पर कबीर की और सतकरतार कहने पर नानक की लाज रखी। इसी तरह धन्य कृपाल कहने पर वह अजायब की लाज रख रहा है।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक प्रेमी : *अगर किसी सतसंगी को दोबारा जन्म लेना पड़े तो क्या वह दूसरे जन्म में भी सतगुरु को याद रखता है?*

बाबा जी : सतगुरु की ज्यादा से ज्यादा कोशिश होती है कि सेवक को दूसरा जन्म न दिया जाए। इसी जन्म में उसे साफ करके ले जाया जाए अगर कोई ऐसा कारण बन जाए तो उसका अगला जन्म अच्छा होता है, उसके ख्याल अच्छे होते हैं लेकिन उसे गुरु जरूर मिलता है। उसके अंदर पहले जन्म से ज्यादा तड़प होगी लेकिन हमें कभी भी अपने मन के अंदर ऐसी कमजोरी नहीं आने देनी चाहिए। हर सतसंगी के अंदर पक्का विश्वास, पूरा भरोसा होना चाहिए कि मैंने दोबारा इस जलती–बलती दुनियां में जन्म नहीं लेना। गुरु इस जन्म में ही मेरा बेड़ा पार करे।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सुन्दरदास, महाराज सावन सिंह का बड़ा अच्छा अभ्यासी सेवक था। वह काफी साल मेरे पास रहा। वह सौ–सवा सौ मील पैदल चलकर महाराज सावन सिंह जी के दर्शन करने जाता था। वह कभी बस, गाड़ी पर नहीं चढ़ा था। एक आदमी ने उसे सलाह दी कि तू साइकिल चलानी सीख ले। वह मेहनती आदमी था उसने कहा कि भगवान ने टाँगे चलने के लिए दी है न कि साइकिल चलाने के लिए। उस आदमी ने कहा कि तू धर्मराज को क्या जवाब देगा? सुन्दरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज से क्या काम? मेरा सतगुरु पूरा है। महाराज सावन सिंह जी मुझे लेने के लिए आएँगे।''

जिस समय सुन्दरदास ने चोला छोड़ा उस समय सैंकड़ों आदमी मौजूद थे। उसने संसार छोड़ने से दो–तीन घंटे पहले ही बता दिया था कि मेरी तैयारी है प्रसाद कर दें। हमने प्रसाद किया बाद में उसने चोला छोड़ दिया। हमें भी सुन्दरदास की तरह भरोसा रखना चाहिए कि हमारा धर्मराज और दूसरे जन्म से क्या वास्ता?

एक प्रेमी : *सतगुरु हमें जिस ढ़ंग से जीने के लिए सिखाता है हम उस ढ़ंग से जीने के लिए इच्छा शक्ति कैसे बढ़ाए?*

बाबा जी : हमें गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए, हमारे अंदर गुरु का डर और प्यार होना चाहिए। हमें अभ्यास करके सिमरन के जरिए अपने ख्यालों को पवित्र करना चाहिए। जिस तरह शरीर के लिए खाना जरूरी है उसी तरह आत्मा के लिए भजन–सिमरन भी बहुत जरूरी है।

शुरू–शुरू में हमें इच्छा शक्ति को इस तरफ करने में मुश्किल होती है बाद में यही इच्छा शक्ति लोभ में तबदील हो जाती है। 'नाम' जपने का लोभ पैदा हो जाता है, गुरु से प्यार करने का लोभ हो जाता है। अभ्यासी ज्यादा नींद नहीं लेता। वह यही सोचता रहता है कि कही मैं सोया न रह जाऊँ, मेरा समय न निकल जाए!

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी ने सन् 1989 में भाई गुरदास जी की वारां पर कुछ अमूल्य सतसंग दिए थे। ये सतसंग मार्च–2011 से प्रकाशित किए जा रहे है। संगत से अनुरोध है कि समयानुसार अपनी मासिक पत्रिका प्राप्त करके इन अमूल्य सतसंगों से लाभ उठाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की अपार दया–मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 20, 21 व 22 मई 2011 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

कम्युनिटी हाल
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नज़दीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली – 110 087

जिन प्रेमियों ने मासिक पत्रिका *अजायब बानी* जारी रखने के लिए सूचित किया है हम उनके आभारी है। कृपया पता बदलने पर सूचित करें ताकि भेजी गई पत्रिका का सदुपयोग हो सके।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com